2024

प्रश्न: "पश्चिम भारत को, चीन की आपूर्ति श्रृंखला पर निर्भरता कम करने के लिये एक विकल्प के रूप में और चीन के राजनीतिक और आर्थिक प्रभुत्व का मुकाबला करने के लिये रणनीतिक सहयोगी के रूप में बढ़ावा दे रहा है।" उदाहरणों के साथ इस कथन की व्याख्या कीजिये।

(150 शब्द, 10 अंक)

'The West is fostering India as an alternative to reduce dependence on China's supply chain and as a strategically to counter China's political and econimic dominance.' Explain this statement with examples.

उत्तर: चीन के बढ़ते आर्थिक प्रभुत्व और मज़बूत विस्तारवादी रणनीतियों की प्रतिक्रिया में पश्चिमी देश 'चीन+1' रणनीति को महत्त्व देने के साथ इसको प्रतिसंतुलित करने में भारत को प्रमुख विकल्प के रूप में देख रहे हैं।

यह रणनीतिक बदलाव निम्नलिखित क्षेत्रों में देखे जा सकते हैं:

चीन की आपूर्ति श्रृंखला पर निर्भरता में कमी लाना

- रणनीतिक और उभरती प्रौद्योगिकियों के संबंध में 'अमेरिका-भारत' पहल का उद्देश्य चीन की प्रौद्योगिकी पर निर्भरता कम करने के क्रम में सेमीकंडक्टर उपकरण, AI, रक्षा सहयोग आदि जैसे क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देना है।
- भारत एवं यूरोपीय संघ की मुक्त व्यापार समझौता वार्ता का उद्देश्य आर्थिक संबंधों को मज़बूत करने के साथ टैरिफ को कम करना है।
- एप्पल और सैमसंग जैसी कंपनियों द्वारा भारत में अपना विस्तार करने से न केवल चीन की आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भरता में कमी आ रही है बल्कि इन कंपनियों को भारत के उपभोक्ता बाज़ार का लाभ मिल रहा है।

चीन के प्रभुत्व के विरुद्ध रणनीतिक सहयोगी के रूप में भारत

- प्रस्तावित भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (IMEC) को यूरेशिया में चीन की BRI रणनीति को प्रतिसंतुलित करने के रूप में देखा जा रहा है, जिससे इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते आर्थिक एवं राजनीतिक प्रभाव को संतुलित करने में मदद मिलेगी।
- चतुर्भुज सुरक्षा संवाद (QUAD) सुरक्षा, आर्थिक और पर्यावरणीय सहयोग के माध्यम से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता बढ़ाने पर केंद्रित है।
- अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत की 2+2 वार्ता तथा मालाबार तथा RIMPAC जैसे संयुक्त अभ्यास इन देशों के बीच अंतर-संचालन एवं सामूहिक सुरक्षा को बढ़ाने पर केंद्रित हैं।
- अमेरिका के नेतृत्व वाला हिंद-प्रशांत आर्थिक ढाँचा (IPEF) आर्थिक चुनौतियों से निपटने एवं व्यापार सहयोग के माध्यम से चीन के प्रभाव को प्रतिसंतुलित करने के क्रम में भारत का सहयोगी है।

निष्कर्ष: निकट भविष्य में भारत के पास वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में एक प्रमुख हितधारक के रूप में उभरने की क्षमता है लेकिन इस क्षमता का पूरा लाभ प्राप्त करने हेतु इसे बुनियादी एवं नियामक ढाँचे संबंधी आंतरिक चुनौतियों का समाधान करना होगा। अन्य देशों के साथ साझेदारी का लाभ उठाकर भारत न केवल अपनी अर्थव्यवस्था को मज़बूत कर सकता है बल्कि एक अधिक संतुलित विश्व व्यवस्था में भी योगदान दे सकता है।

प्रश्न: मध्य एशियाई गणराज्यों (CARs) के साथ भारत के विकसित होते राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक संबंधों का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिये तथा क्षेत्रीय और वैश्विक भूराजनीति में उनके बढ़ते महत्त्व पर प्रकाश डालिये।

(150 शब्द, 10 अंक)

Critically analyse India's evolving diplomatic, economic and strategic relations with the Central Asian Republics (CARs) highlighting their increasing significance in regional and global geopolitics.

उत्तर: मध्य एशिया में भारत, वैश्विक शक्तियों से प्रतिस्पर्द्धा के बीच अपनी स्थिति को मज़बूत करने की ओर अग्रसर है।

मध्य एशियाई गणराज्यों का महत्त्व

- मध्य एशियाई देश (विशेषकर कजाकिस्तान) कोयला, तेल, गैस, यूरेनियम और सोने जैसे खनिजों से समृद्ध हैं।
- मध्य एशिया यूरोप, अमेरिका, चीन और ईरान के लिये महत्त्वपूर्ण है तथा यहाँ चीन BRI के भाग के रूप में अत्यधिक निवेश कर रहा है।

भारत-CAR संबंधों का विकास

- "कनेक्ट सेंट्रल एशिया" पहल (2012), भारत-मध्य एशिया शिखर सम्मेलन (2021 से) और SCO में भागीदारी मध्य एशिया के साथ राजनयिक संबंधों को मज़बूत करने के भारत के प्रयासों को दर्शाती है।
- TAPI पाइपलाइन का विकास; भारत का अश्गाबात समझौते (2018) में शामिल होना और हॉर्मुज जलडमरूमध्य को बाईपास करने के लिये चाबहार बंदरगाह का विकास- ये सभी मध्य एशिया एवं यूरेशिया के साथ बेहतर व्यापार के प्रयासों को दर्शाते हैं।
- वर्ष 2022 में भारत ने अफगानिस्तान की राजनीतिक अस्थिरता के साथ आतंकवाद के संभावित खतरे के बीच CAR के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों की बैठक आयोजित की। ताजिकिस्तान में भारत के सैन्य अड्डों के साथ यह उज्बेकिस्तान के साथ संयुक्त अभ्यास करता है, जो इस क्षेत्र में रक्षा साझेदारी के क्रम में इसके प्रयासों को दर्शाता है।

समालोचनात्मक विश्लेषण

अशांत अफगानिस्तान के कारण कनेक्टिविटी संबंधी समस्याएँ जारी रहने तथा भारत-पाकिस्तान के बीच तनावपूर्ण संबंधों के कारण मध्य एशिया के साथ भारत का व्यापार बाधित हो रहा है। भारत का मध्य

एशियाई व्यापार 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर है, जो चीन के 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर से काफी कम है। इस क्षेत्र में भारत की प्रगति सीमित बनी हुई है।

निष्कर्ष: बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव और भारत की कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीति के वास्तविक होने के साथ, 21वीं सदी संभवत: इस क्षेत्र के लिये सबसे निर्णायक अवधि हो सकती है। जैसा कि भारत अपनी सीमाओं से परे देखता है, मध्य एशियाई गणराज्य भारत को मध्य एशिया में अग्रणी भूमिका निभाने के लिये अपने राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों का लाभ उठाने के लिये सही मंच प्रदान करता है।

प्रश्न: 'आतंकवाद वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिये एक बड़ा खतरा बन गया है।' अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस खतरे को संबोधित करने और कम करने में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की आतंकवाद निरोधी समिति (सीटीसी) और इससे संबंधित निकायों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन कीजिये।

(250 शब्द, 15 अंक)

'Terrorism has become a significant threat to global peace and security.' Evaluate the effectivencess of the United Nations Security Council's Counter Terrorism Committee (CTC) and its associated bodies in addressing and mitigating this threat at the international level.

उत्तर: वैश्विक आतंकवाद सूचकांक वर्ष 2024 में वैश्विक स्तर पर आतंकवाद से संबंधित मौतों में 22% की वृद्धि दर्ज की गई है, जो वर्ष 2017 के पश्चात् से सबसे अधिक है। इसके जवाब में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की आतंकवाद-निरोधी समिति (CTC) इस मुद्दे से निपटने के लिये अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिये आतंकवाद का खतरा

- **राज्य संप्रभुता का क्षरण:** अफगानिस्तान और सोमालिया में कमज़ोर सरकारें तालिबान तथा अल-शबाब को उत्थान का मौका देती हैं।
- **आर्थिक प्रभाव:** 9/11 के हमलों से अमेरिका को 40 बिलियन अमेरिकी डॉलर का नुकसान हुआ, जबकि वर्ष 2015 के पेरिस हमलों से यूरोपीय पर्यटन को नुकसान पहुँचा।
- **मानवीय संकट:** ISIS तथा सीरिया और इराक में संघर्षों के कारण बड़े शरणार्थी संकट उत्पन्न हो गए हैं, जिससे मेज़बान देशों पर दबाव बढ़ गया है।
- **राजनीतिक तनाव:** आतंकवाद भू-राजनीतिक संघर्षों को बढाता है, विशेष रूप से भारत और पाकिस्तान के बीच, जिसका उदाहरण वर्ष 2019 का पुलवामा हमला है।

UNSC-CTC और इसकी प्रभावशीलता

- इसकी स्थापना 9/11 के हमलों के बाद आतंकवाद से निपटने के लिये प्रस्ताव 1373 द्वारा की गई थी।
- यह संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 1373 और 1540 जैसे विधिक ढाँचों के कार्यान्वयन को सुगम बनाता है, जिसके अंतर्गत सदस्य देशों को आतंकवाद से लड़ने तथा हथियारों के प्रसार को रोकने की आवश्यकता होती है।
- यह क्षमता निर्माण पहल को बढ़ावा देता है, खुफिया जानकारी साझा करने के लिये अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देता है तथा आधुनिक रणनीतियों के साथ साइबर आतंकवाद और सोशल मीडिया रिक्रूटमेंट जैसी चुनौतियों का समाधान करता है।

UNCTC की चुनौतियाँ

- **सार्वभौमिक परिभाषा का अभाव:** आतंकवाद की असंगत परिभाषाओं के कारण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भिन्न-भिन्न प्रतिक्रियाएँ सामने आती हैं।
- **प्रवर्तन संबंधी मुद्दे:** सोमालिया जैसे स्थानों में आतंकवाद-निरोधी प्रयास अक्सर विभिन्न भौतिक और शासन-संबंधी बाधाओं के कारण अप्रभावी हो जाते हैं।
- **राजनीतिक जटिलताएँ:** वीटो शक्ति, विशेष रूप से चीन की ओर से, आतंकवादी घोषित करने पर आम सहमति बनाने में बाधा उत्पन्न कर सकती है।
- **उभरते खतरे:** साइबर आतंकवाद और इससे होने वाले हमले जैसी नई चुनौतियाँ तेज़ी से उभर रही हैं।

सुधार हेतु सुझाव

- आतंकवाद-निरोधी बाध्यकारी ढाँचे का निर्माण करना।
- वित्तपोषण और आवागमन हेतु वास्तविक समय पर सूचना साझाकरण को बढ़ावा देना।
- कट्टरपंथ को रोकने के लिये स्थानीय समुदायों के साथ सहयोग करना।
- विकासशील देशों के लिये वित्तीय और तकनीकी सहायता बढ़ाना।

निष्कर्ष: CTC ने आतंकवाद का सामना करने में प्रगति की है, एक सक्रिय दृष्टिकोण महत्त्वपूर्ण है। विधिक ढाँचे को मज़बूत करना, खुफिया जानकारी साझा करना और सामुदायिक पहल को बढ़ावा देना अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को उभरते खतरों से निपटने तथा वैश्विक सुरक्षा को मज़बूत करने के लिये बेहतर ढंग से तैयार करेगा।

प्रश्न: वैश्विक व्यापार और ऊर्जा प्रवाह पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारत के लिये मालदीव के भू-राजनीतिक और भू-रणनीतिक महत्त्व पर चर्चा कीजिये। आगे यह भी चर्चा करें कि यह संबंध अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के बीच भारत की समुद्री सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता को कैसे प्रभावित करता है?

(250 शब्द, 15 अंक)

Discuss the geopolitical and geostrategic importance of Maldives for India with a focus on global trade and energy flows. Further also discuss how this relationship affects India's maritime security and regional stabiltiy amidst international competition?

उत्तर: मालदीव- जो भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी का एक महत्त्वपूर्ण भाग है- हिंद महासागर में महत्त्वपूर्ण समुद्री मार्गों पर रणनीतिक रूप से स्थित है, जो मालदीव के भू-राजनीतिक और भू-रणनीतिक महत्त्व को उसके भौतिक आकार से कहीं अधिक परिभाषित करता है।

मालदीव का भू-राजनीतिक और भू-रणनीतिक महत्त्व

- **संचार हेतु समुद्री मार्ग (SLOC):** मालदीव के दक्षिणी और उत्तरी छोर पर दो महत्त्वपूर्ण SLOC हैं, जो अदन की खाड़ी, होर्मुज की खाड़ी तथा मलक्का जलडमरूमध्य के बीच समुद्री व्यापार के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
  - भारत का 50% बाह्य व्यापार तथा 80% ऊर्जा आयात अरब सागर में स्थित इन SLOC से होकर गुजरता है।
- **हिंद महासागर भारत का पिछला भाग:** मालदीव की रणनीतिक स्थिति, सहयोगात्मक रक्षा पहलों तथा समुद्री निगरानी और मानवीय सहायता में संयुक्त प्रयासों के कारण हिंद महासागर में शुद्ध सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की भूमिका के लिये महत्त्वपूर्ण है।

भारत-मालदीव संबंधों में परिवर्तन का प्रभाव

हाल के वर्षों में भारत-मालदीव संबंधों में गिरावट देखी गई है:

- **सामरिक गतिशीलता:** मालदीव के साथ भारत की सीमित भागीदारी ने BRI निवेश के माध्यम से चीन के बढ़ते प्रभाव को सक्षम किया है, जिससे प्रमुख समुद्री मार्गों पर भारत के नियंत्रण और इसकी समुद्री सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो गया है।
- **आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा:** मालदीव में भारत के तुलनात्मक रूप से कम निवेश के कारण, चीन अपनी चेकबुक डिप्लोमेसी के साथ एक प्रमुख आर्थिक अभिकर्त्ता के रूप में उभरा है, जो इस क्षेत्र में प्राथमिक भागीदार के रूप में भारत की दीर्घकालिक स्थिति को सीधे चुनौती दे रहा है।
- **कूटनीतिक तनाव:** मालदीव की संतुलन रणनीति, जिसे भारत के 'बिग ब्रदर सिंड्रोम' के रूप में माना जाता है, भारत के कूटनीतिक प्रयासों को जटिल बनाती है और हिंद महासागर में उसके प्रभाव को कमज़ोर करती है।
- **समुद्री सुरक्षा:** मालदीव और श्रीलंका में नई डॉकिंग सुविधाओं के साथ-साथ चीन की पनडुब्बी तथा विध्वंसक तैनाती, भारत के समुद्री हितों के लिये खतरा उत्पन्न करती है।
- **आतंकवाद:** भारत विरोधी भावना और मालदीव का इस्लामी मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करना आतंकवाद के बारे में चिंताएँ बढ़ाता है, जिससे क्षेत्र में अस्थिरता उत्पन्न हो सकती है एवं भारत की सुरक्षा को खतरा हो सकता है।

निष्कर्ष: बढ़ते चीनी प्रभाव और भारत विरोधी भावना के बीच, क्षेत्रीय स्थिरता तथा आपसी समृद्धि के लिये भारत-मालदीव संबंधों को मज़बूत करना आवश्यक है। सामंजस्यपूर्ण साझेदारी से आर्थिक संवृद्धि, सुरक्षा और सांस्कृतिक संबंधों को लाभ होगा, जिससे दोनों देशों के लिये अधिक लचीला एवं समृद्ध भविष्य को बढ़ावा मिलेगा।

2023

प्रश्न: 'संघर्ष का विषाणु एस.सी.ओ के कामकाज को प्रभावित कर रहा है' उपरोक्त कथन के आलोक में समस्याओं को कम करने में भारत की भूमिका बताइये। (150 शब्द, 10 अंक)
'Virus of Conflict is affecting the functioning of the SCO.' In the light of the above statement point out the role of India in mitigating the problems.

उत्तर: शंघाई सहयोग संगठन (SCO), विश्व की बहुसंख्यक आबादी को शामिल करते हुए एक प्रमुख गैर-पश्चिमी सुरक्षा संधि के रूप में उभरा है, जिसका उद्देश्य यूरेशिया में शांति को बढ़ावा देना है। हालाँकि अपने सदस्यों की विविध प्रकृति और हितों को देखते हुये, इसके भीतर विभिन्न मुद्दों का उठना स्वाभाविक है।

SCO के भीतर संघर्ष

- **भारत और पाकिस्तान:** पड़ोसी देश पाकिस्तान कभी भी भारत के साथ अपने संघर्ष को समाप्त नहीं करना चाहता है।
- **भारत और चीन:** अपने पड़ोसियों के क्षेत्रों पर अपना दावा करने के चीन के आक्रामक रुख ने भारत सहित अन्य पड़ोसी देशों के लिये समस्याएँ उत्पन्न की हैं।
  - बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) भी एक समस्या है क्योंकि यह भारत की क्षेत्रीय अखंडता का उल्लंघन करता है और इसे एक आक्रामक ऋण-पाश के रूप में भी देखा जाता है।
- **आर्थिक असमानताएँ:** सदस्यों की आय में भारी असमानता होने से आंतरिक घर्षण उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

भारत इन समस्याओं को कैसे कम कर सकता है?

- **संवाद प्रोत्साहन:** भारत को संवाद और कूटनीतिक समाधान के समर्थक के रूप में जाना जाता है।
- **सांस्कृतिक कूटनीति:** भारत के अधिकांश SCO देशों के साथ अच्छे सांस्कृतिक संबंध हैं। भारत को इस सॉफ्ट पावर का उचित लाभ उठाने पर ध्यान देना चाहिये।
- **बैकचैनल डिप्लोमेसी (Backchannel Diplomacy):** ट्रैक-II (Track-II) कूटनीति संघर्ष प्रबंधन के लिये अनुकूल माहौल के निर्माण में सहायक हो सकती है।
- **संयुक्त-सैन्य अभ्यास:** यह सेनाओं का परिचय कराने और राष्ट्रों के बीच स्वस्थ संबंध बनाने का एक शानदार तरीका है। उदाहरण के लिये, संयुक्त SCO आतंकवाद विरोधी अभ्यास।

'वसुधैव कुटुंबकम' के मूल्यों और पंचशील एवं गुटनिरपेक्षता जैसी ऐतिहासिक नीतियों को देखते हुए विभिन्न SCO संघर्षों को कम करने में भारत की भूमिका बहुत बड़ी हो सकती है।

प्रश्न: भारतीय प्रवासियों ने पश्चिम में नई ऊँचाइयों को छुआ है। भारत के लिये इसके आर्थिक और राजनीतिक लाभों का वर्णन करें। (150 शब्द, 10 अंक)

Indian diaspora has scaled new heights in the West. Describe its economic and political benefits for India.

उत्तर: भारत वर्ष 2023 में 108 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्राप्त करने वाला सबसे अधिक धनप्रेषण प्राप्तकर्त्ता देश है, लेकिन वित्तीय रिटर्न के अलावा दुनिया भर में भारतीय मूल के 18 मिलियन से अधिक लोगों की बढ़ती सफलता भारत को विभिन्न लाभ प्रदान करती है।

प्रवासी भारतीयों की सफलता के प्रमुख उदाहरण

- दुनिया भर की शीर्ष कंपनियों के 'भारतीय मूल' प्रमुखों की मौजूदगी। उदाहरण के लिये; सुंदर पिचाई (Google), शांतनु नारायण (Adobe)।
- भारतीय मूल के राष्ट्राध्यक्ष और मंत्री पदों पर बैठे लोग। उदाहरण के लिये, ऋषि सुनक (यू.के.), कमला हैरिस (यू.एस.ए.) आदि।

राजनीतिक एवं आर्थिक लाभ

- प्रवासी भारतीयों द्वारा भेजा गया धन व्यापार घाटे की भरपाई में मदद करके भुगतान संतुलन पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है।
- प्रवासी नागरिक अंतर्राष्ट्रीय मंचों और संयुक्त राष्ट्र जैसे बहुपक्षीय संस्थानों द्वारा भारत के पक्ष में लचीलापन बरतने में मदद करते हैं।
- भारतीय संस्कृति के संपर्क में आने के कारण 'भारतीय वस्तुओं' की बढ़ती मांग बड़ी संख्या में भारतीय आबादी वाले देशों में देखी जा रही है।
- उदाहरण के लिये, यूके और अन्य पश्चिमी देशों में भारतीय रेस्तरां एवं योग स्टूडियो।
- विशेष रूप से पश्चिम एशियाई देशों में कम कुशल श्रमिकों के प्रवास के कारण बेरोज़गारी में कमी।
- उदाहरण के लिये, संयुक्त अरब अमीरात में काम करने वाले केरल और तमिलनाडु के श्रमिक।

दुनियाभर में 32 मिलियन प्रवासी भारतीयों के व्यापक प्रसार के कारण भारत को एक बड़ा लाभ प्राप्त होता है जबकि प्रतिभा पलायन भारत जैसे विकासशील देश के लिये एक समस्या बनी हुई है, किंतु हमें याद रखना चाहिये कि इसके बदले में हमें सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक लाभ मिलते हैं।

प्रश्न: 'नाटो का विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण और एक मज़बूत अमेरिका-यूरोप रणनीतिक साझेदारी भारत के लिये अच्छा काम करती है।' इस कथन के बारे में आपकी क्या राय है? अपने उत्तर के समर्थन में कारण और उदाहरण दीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

'The expansion and strengthening of NATO and a stronger US-Europe strategic partnership works well for India.' What is your opinion about this statement? Give reasons and examples to support your answer.

उत्तर: वर्तमान विश्व बहुध्रुवीय विश्व की अवधारणा को अच्छी तरह से अपना रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि नाटो और यूरोपीय संघ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शक्ति के केंद्र बने हुए हैं। भारत आने वाले वर्षों में एक प्रमुख शक्ति बनने की आशा रखता है, लेकिन फिलहाल उसे नाटो और अमेरिका-यूरोप के मज़बूत संबंधों से लाभ होगा।

यह भारत के लिये क्यों प्रभावी है?

- **चीन को लेकर समस्या:** चूँकि नाटो और यूरोपीय संघ चीनी आक्रामकता की समस्या पर आम सहमति दर्शाते हैं, इसलिये उनके साथ रणनीतिक साझेदारी में शामिल होना भारत के लिये हितकारी है।
- **आर्थिक विवरण:** इन देशों के पास विश्व सकल घरेलू उत्पाद की मात्रा बहुत अधिक है। भारत को इन देशों के साथ व्यापार संबंधों और उनकी साझेदारी से मिलने वाली राजनीतिक-आर्थिक स्थिरता से लाभ होगा।
- **लोकतांत्रिक मूल्य:** लोकतंत्र के जिन साझा वैचारिक मूल्यों को इन समूहों द्वारा बरकरार रखा जा रहा है, वे भारत के दो विरोधी पड़ोसियों के विपरीत भारत के हितों के अनुरूप हैं।
- **रक्षा क्षमताएँ:** पश्चिमी सेना के साथ जुड़ाव बढ़ने से भारत को तकनीकी जानकारी, उन्नत सैन्य प्रशिक्षण और रणनीतिक सहयोग के मामले में लाभ होगा।
- **आतंकवाद से निपटना:** भारत एक ऐसा राष्ट्र है, जिसे ऐतिहासिक रूप से आतंकवादी हमलों से निपटना पड़ा है, जो आतंकवाद को रोकने या न्यूनतम करने के लिये किये गए किसी भी प्रयास की सराहना करेगा, जिससे अमेरिका-यूरोप रणनीतिक साझेदारी को अप्रत्यक्ष रूप से लाभ होगा।

कुछ प्रमुख चुनौतियाँ

- **भारत-रूस संबंध:** भारत को पश्चिमी देशों के साथ निकटता इस तरह से बनानी होगी कि उसके अपने दीर्घकालिक साझेदार रूस के साथ संबंध खराब न हों। अमेरिका और रूस के बीच संतुलन बनाना भारतीय कूटनीति की परीक्षा है।
- **प्रतिस्पर्द्धा में वृद्धि:** यूरोपीय संघ और अमेरिका के मज़बूत संबंधों से तात्पर्य उन क्षेत्रों की प्रतिस्पर्द्धा में वृद्धि से है, जिनमें भारत आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है, जैसे- आईटी एवं फार्मास्यूटिकल्स उद्योग।

अंततः अगर भारत अपने सम्मुख आने वाली इन चुनौतियों से निपट सकता है तो उसे नाटो और अमेरिका-यूरोप के साथ मज़बूत रणनीतिक साझेदारी से लाभ होगा।

प्रश्न: 'समुद्र ब्रह्मांड का एक महत्त्वपूर्ण घटक है।' उपरोक्त कथन के आलोक में पर्यावरण संरक्षण, समुद्री रक्षा और सुरक्षा को बढ़ाने में अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (आई.एम.ओ.) की भूमिका पर चर्चा कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

'Sea is an important Component of the Cosmos', Discuss in the light of the above statement the role of the IMO (International Maritime Organisation) in protecting environment and enhancing maritime safety and security.

उत्तर: अपनी समृद्ध जैव विविधता को देखते हुए समुद्र पृथ्वी के लिये अविश्वसनीय रूप से महत्त्वपूर्ण है, जिसमें मानव जाति के लिये समृद्ध संसाधन निकाय और परिवहन मार्ग उपलब्ध कराना शामिल है। संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी, अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO) अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग की सुरक्षा में सुधार और जहाज़ों से होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिये कार्य करती है।

पर्यावरण संरक्षण

- **बेलास्ट वाटर मैनेजमेंट कन्वेंशन:** जहाज़ों के टैंकों को स्थिर करने के लिये उनमें जमा बेलास्ट वाटर के प्रबंधन, उपचार और निर्वहन के लिये दिशानिर्देश IMO द्वारा तय और मानकीकृत किये गए हैं।
- **मारपोल कन्वेंशन:** यह एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन है, जो जहाज़ों से होने वाले प्रदूषण, जैसे- तेल रिसाव, रासायनिक प्रदूषण आदि को रोकने से संबंधित है।
- **ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन:** जहाज़ों के लिये सल्फर और नाइट्रोजन ऑक्साइड के उत्सर्जन की कठोर सीमाएँ तय की गई हैं। ये विशेषरूप से तटीय क्षेत्रों में प्रदूषण को कम करने में सहायता करती हैं।
- **EEXI और CII:** शिपिंग उद्योग की पर्यावरणीय लागत को कम करने के लिये IMO द्वारा मौजूदा जहाज़ के ऊर्जा दक्षता सूचकांक (EEXI) और कार्बन तीव्रता संकेतक (CII) संबंधी सूचना एकत्रित करने का कार्य किया जाता है।

समुद्री सुरक्षा

- **ISPS कोड:** अंतर्राष्ट्रीय जहाज़ और बंदरगाह सुविधा सुरक्षा (ISPS) कोड जहाज़ों तथा बंदरगाह सुविधाओं की सुरक्षा बढ़ाने के उपायों को सूचीबद्ध करता है।
- **SOLAS कन्वेंशन:** समुद्र में जीवन रक्षा के लिये अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन (SOLAS) यह सुनिश्चित करता है कि जहाज़ का निर्माण, उपकरण और संचालन उनके दिशानिर्देशों के अनुकूल है।
- **STCW कन्वेंशन:** नाविकों के लिये प्रशिक्षण, प्रमाणन और निगरानी के मानकों पर अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन (STCW) नाविकों के लिये बुनियादी स्तर की योग्यता हासिल करने के लिये एक मानक प्रशिक्षण और प्रमाणन सुनिश्चित करता है।
- **खोज और बचाव (SAR):** IMO द्वारा जारी SAR योजना जीवन बचाने और समुद्री नेविगेशन की समग्र सुरक्षा में सुधार करने के लिये खोज एवं बचाव सेवाओं की वैश्विक उपलब्धता सुनिश्चित करती है।

अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO) पर्यावरण की रक्षा करने और समुद्री सुरक्षा को बढ़ाने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है, जो विभिन्न कन्वेंशन के दायरे में कार्य करता है तथा विभिन्न संहिताओं का प्रयोग करता है।

2022

प्रश्न: I2U2 (भारत, इज़राइल, संयुक्त अरब अमीरात और संयुक्त राज्य अमेरिका) समूहन वैश्विक राजनीति में भारत की स्थिति को किस प्रकार रूपांतरित करेगा? (250 शब्द, 15 अंक)
How will I2U2 (India, Israel, UAE and USA) grouping transform India's position in global politics?

उत्तर: I2U2 भारत, इज़राइल, संयुक्त अरब अमीरात और अमेरिका की संयुक्त पहल है। इसे 'बेस्ट एशियन क्वाड' भी कहा जाता है। I2U2 को वर्ष 2021 में समुद्री सुरक्षा, बुनियादी ढाँचे और परिवहन से संबंधित मुद्दों से निपटने हेतु गठित किया गया था।

वैश्विक राजनीति में भारत की स्थिति को बदलने में I2U2 की भूमिका

- **पश्चिम एशिया के साथ संबंध**
  - भारत को इज़राइल और उसके खाड़ी भागीदारों के साथ बातचीत करने की अधिक स्वतंत्रता होगी।
  - 'अब्राहम एकॉर्ड' भारत को इज़राइल और खाड़ी देशों के बीच की खाई को पाटने में मदद करेगा।
  - अमेरिका और पश्चिम एशियाई देश क्षेत्रीय मुद्दों को सुलझाने हेतु भारत के महत्त्व को समझ रहे हैं।
  - इज़राइल-फिलीस्तीन विवाद के बावजूद भारत ने इज़राइल और खाड़ी देशों के साथ अपने राजनीतिक संबंधों को सफलतापूर्वक संतुलित किया है।
  - संयुक्त अरब अमीरात और इज़राइल दोनों के साथ भारत के संबंधों को और गहरा करेगा।
- **भारत और अमेरिका**
  - भारत और अमेरिका के पास एक-दूसरे से जुड़ने हेतु दो प्लेटफॉर्म उपलब्ध - क्वाड तथा I2U2।
  - हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की भूमिका मज़बूत होगी।
- **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश**
  - भारत एक विशाल उपभोक्ता बाज़ार है, जो पश्चिम एशिया के निवेशकों को आकर्षित करेगा।
  - I2U2 भारत और यूएई के मध्य हस्ताक्षरित व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते को बढ़ावा देता है।
- **कच्चे तेल और रक्षा**
  - यूएई और सउदी अरब भारत के शीर्ष तेल निर्यातकों में शामिल हैं। इज़राइल भारत का एक महत्त्वपूर्ण रक्षा साझेदार है।
- **स्वच्छ ऊर्जा**
  - गुजरात में बैटर कंपनी द्वारा ऊर्जा भंडारण प्रौद्योगिकी के साथ पवन और सौर ऊर्जा की एक हाइब्रिड अक्षय ऊर्जा परियोजना की स्थापना की जाएगी।

- **खाद्य सुरक्षा**
  - आधुनिक जलवायु प्रौद्योगिकी के साथ भारत में कई एकीकृत खाद्य पार्क बनाने के लिये 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश किया जाएगा।

I2U2 समूह पश्चिम एशिया और दक्षिण एशिया की भू-राजनीति में अत्यधिक मायने रखता है। यहाँ भारत इज़राइल और अरब विश्व के बीच विश्वास कायम करने हेतु एक संचार चैनल के रूप में कार्य कर सकता है।

प्रश्न: 'स्वच्छ ऊर्जा आज की ज़रूरत है।' भू-राजनीति के संदर्भ में, विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों में जलवायु परिवर्तन की दिशा में भारत की बदलती नीति का संक्षिप्त वर्णन कीजिये।

(250 शब्द, 15 अंक)

'Clean energy is the order of the day.' Describe briefly India's changing policy towards climate change in various international fora in the context of geopolitics.

उत्तर: भारत की जलवायु परिवर्तन नीति में पिछले कुछ वर्षों में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव आया है। कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज़ में ऊर्जा सुरक्षा की मांग से लेकर वैश्विक स्तर पर स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में पहल करने तक भारत का राजनयिक रुख इसके पर्यावरण-समर्थक दृष्टिकोण को दर्शाता है। नेट-ज़ीरो प्रतिबद्धताओं को स्वीकार करते हुए भारत ने अपने रुख को दोहराया है कि जलवायु परिवर्तन पर उसकी नीति सामान्य, लेकिन विभेदित उत्तरदायित्व के सिद्धांत पर आधारित है।

भू-राजनीति के संदर्भ में जलवायु परिवर्तन की दिशा में भारत की बदलती नीति

- **द्विपक्षीय प्रयास**
  - यूरोपीय संघ-भारत स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु भागीदारी
  - क्लाइमेट एंड फाइनेंस मोबिलाइज़ेशन डायलॉग (CFMD) (भारत व अमेरिका), उद्देश्य- शून्य उत्सर्जन व कार्बन तटस्थता।
  - फोरम फॉर इंडिया पैसिफिक आइलैंड्स कोऑपरेशन समिति (FIPIC), जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील होते द्वीपों की सुरक्षा हेतु।
  - भारत व जर्मनी के मध्य हरित व सतत् विकास हेतु समझौता।
- **मिनिलेटरल प्रयास**
  - क्वाड क्लाइमेट चेंज एक्शन एंड मिटिगेशन पैकेज (Q-CHAMP) स्वच्छ ऊर्जा हेतु।
  - इंडो-पैसेफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क (IPEF) (मुख्य आधार- स्वच्छ ऊर्जा, डीकार्बोनाइजेशन)
  - I2U2 : स्वच्छ ऊर्जा हेतु एक हाइब्रिड अक्षय ऊर्जा परियोजना की स्थापना गुजरात में की जाएगी।
- **बहुपक्षीय प्रयास**
  - वैश्विक स्वच्छ ऊर्जा कार्य मंच (स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकी को आगे बढ़ाना)।
  - अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (भारत व फ्राँस द्वारा स्थापित सौर ऊर्जा प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने हेतु)।
  - वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड कार्यक्रम।
  - लाइफ स्टाइल फार एनवायर्नमेंट (LIFE), ऐसी जीवन शैली अपनाना, जो हमारे ग्रह के अनुरूप हो।

इस संदर्भ में जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु भारत ने निम्नलिखित प्रयास किये हैं– पंचामृत का पाँच सूत्री एजेंडा (COP-26), वर्ष 2030 तक गैर-जीवाश्म स्रोतों से 500 गीगावाट ऊर्जा प्राप्त करना और वर्ष 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन।

इस प्रकार भारत ने वैश्विक स्तर पर हो रहे घटनाक्रमों के अनुसार अपनी जलवायु परिवर्तन नीति को संशोधित किया है और अपने भू-राजनीतिक उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाले मुद्दों को कम करने की पहल की है।

प्रश्न: 'भारत श्रीलंका का बरसों पुराना मित्र है।' पूर्ववर्ती कथन के आलोक में श्रीलंका के वर्तमान संकट में भारत की भूमिका की विवेचना कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

'India is an age-old friend of Sri Lanka.' Discuss India's role in the recent crisis in Sri Lanka in the light of the preceding statement.

उत्तर: भारत और श्रीलंका हिंद महासागर में स्थित दो दक्षिण एशियाई देश हैं। प्राचीन काल से ही दोनों देशों के मध्य सौहार्दपूर्ण संबंध रहे हैं। दोनों की बौद्धिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषायी संबंधों की विरासत है।

वर्ष 2022 में श्रीलंका सात दशकों में सबसे खराब आर्थिक संकट की चपेट में था, जिससे वहाँ की अर्थव्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई।

श्रीलंकाई संकट

कारण	श्रीलंका को भारत का समर्थन
❑ 2019 में इस्टर बम विस्फोट (कोलंबो) के कारण होने से पर्यटन उद्योग प्रभावित विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट। ❑ कोविड-19 के कारण चाय, रबर और कपड़ों का निर्यात प्रभावित। ❑ वर्ष 2020-21 में राजकोषीय घाटा 10% से अधिक हो गया। ❑ चीन का कर्ज़जाल (8 अरब डॉलर)। ❑ वर्ष 2021 में जैविक खेती में रातोंरात बदलाव ने खाद्य उत्पादन को प्रभावित किया।	❑ नेबरहुड फर्स्ट नीति का अनुसरण। ❑ खाद्य, स्वास्थ्य और सुरक्षा पैकेज के साथ 3.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक की विदेशी भंडार की सहायता। ❑ 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर का रियायती ऋण। ❑ पेट्रोलियम उत्पाद की खरीद हेतु 500 मिलियन अमेरिकी डॉलर की लाइन ऑफ क्रेडिट (LOC)। ❑ सार्क करेंसी स्वैप फ्रेमवर्क 2019-22 के तहत 400 मिलियन अमेरिकी डॉलर की करेंसी स्वैप सुविधा।

	❑ 65000 मीट्रिक टन यूरिया की खरीद के लिये 55 मिलियन अमेरिकी डॉलर की क्रेडिट लाइन प्रदान की।

इसके अतिरिक्त श्रीलंका के विभिन्न अस्पतालों को दवाओं और चिकित्सा आपूर्ति की एक बड़ी खेप भेंट की गई।

श्रीलंका को भारत की सहायता, उसकी नेबरहुड फर्स्ट की नीति और सभी के लिये सुरक्षा और विकास के दृष्टिकोण के अनुरूप है। ये जुड़वाँ सिद्धांत इस क्षेत्र में पड़ोसी देशों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये पहले प्रतिवादी के रूप में उभरने पर भारत के प्रयासों को रेखांकित करते हैं।

प्रश्न: आपके विचार में क्या बिम्सटेक (BIMSTEC) सार्क (SAARC) की तरह एक समानांतर संगठन है? इन दोनों के बीच क्या समानताएँ और असमानताएँ हैं? इस नए संगठन के बनाए जाने से भारतीय विदेश नीति के उद्देश्य कैसे प्राप्त हुए हैं? (150 शब्द, 10 अंक)

Do you think that BIMSTEC is a parallel organisation like the SAARC? What are the similarities and dissimilarities between the two? How are Indian foreign policy objectives realized by forming this new organisation?

उत्तर: दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (SAARC, 1985) तथा बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिये बंगाल की खाड़ी पहल (BIMSTEC, 1997), दोनों ही उपक्षेत्रीय संगठन हैं। सार्क की विफलता ने क्षेत्रीय देशों को एक विकल्प की तलाश करने के लिये प्रेरित किया है। बिम्सटेक को व्यवहार्य विकल्प के रूप में पसंद किया जाता है।

सार्क के समानांतर संगठन के रूप में बिम्सटेक

- बिम्सटेक का प्राथमिक फोकस दक्षिण एशिया के देशों के बीच आर्थिक और तकनीकी सहयोग पर है।
- बिम्सटेक सदस्य देशों के आमतौर पर सौहार्दपूर्ण संबंध होते हैं, जिसका SAARC में अभाव है।
- सार्क के पास विवादों को सुलझाने या विवादों में मध्यस्थता करने की कोई व्यवस्था नहीं है।

सार्क और बिम्सटेक के मध्य

समानता	असमानता
❑ दोनों दक्षिण एशिया के अंतर-क्षेत्रीय संगठन हैं। ❑ भारत, भूटान, श्रीलंका, नेपाल और बांग्लादेश दोनों के सदस्य हैं। ❑ दोनों आर्थिक और क्षेत्रीय सहयोग पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ❑ शांति व स्थायित्व पर बल।	❑ सार्क के पास एक मुक्त व्यापार समझौता है, लेकिन बिम्सटेक के पास ऐसा नहीं है। ❑ सार्क संयुक्त राष्ट्र में एक पर्यवेक्षक के रूप में स्थायी राजनयिक संबंध रखता है, लेकिन BIMSTEC के पास ऐसा नहीं है। ❑ सार्क में क्षेत्रीय संपर्क (BBIN) मोटर वाहन समझौता अधिक है, जबकि बिम्सटेक समुद्री सहयोग पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है। ❑ सार्क पर पाकिस्तान का दबदबा।

भारत की विदेश नीति के उद्देश्यों को पूरा करने में बिम्सटेक की भूमिका

- बिम्सटेक दक्षिण एशियाई तथा दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है।
- बिम्सटेक के संदर्भ में भारत गुजराल सिद्धांत का पालन कर द्विपक्षीय संबंधों को मधुर बना सकता है।
- नेबहरहुड फर्स्ट की नीति, पूर्व की ओर देखो नीति के क्रियान्वयन में सहायता।
- हिंद महासागर क्षेत्र में प्रभावी सुरक्षा प्रदाता के भारत के लक्ष्य को भी BIMSTEC देशों के बीच समन्वय और संचार से बल मिलता है।

स्पष्ट है कि बिम्सटेक की सफलता दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग में एक नया अध्याय जोड़ती है। हालाँकि, यह बिम्सटेक को सार्क का विकल्प नहीं बनाता है। अत: सार्क का पुनरुत्थान आवश्यक है और यह भारत-अफगानिस्तान संबंधों के लिये भी महत्त्वपूर्ण है।

2021

प्रश्न: "यदि विगत कुछ दशक एशिया के विकास की कहानी के रहे तो परवर्ती कुछ दशक अफ्रीका के हो सकते हैं।" इस कथन के आलोक में, हाल के वर्षों में अफ्रीका में भारत के प्रभाव का परीक्षण कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

"If the last few decades were of Asia's growth story, the next few are expected to be of Africa's." In the light of this statement, examine India's influence in Africa in recent years.

उत्तर: पिछले कुछ दशकों में एशियाई देशों ने कई क्षेत्रों में अत्यधिक वृद्धि दर्ज की है। अफ्रीका एक संसाधन संपन्न महाद्वीप है और 2050 तक इसकी आधी आबादी 25 वर्ष से कम आयु की होगी, जो अफ्रीका के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती है। अफ्रीका में भारत के प्रभाव को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है–

- **राजनीतिक प्रभाव:** पिछले कुछ वर्षों में, अफ्रीका भारत द्वारा विकास सहायता और कूटनीतिक सहायता प्राप्त करने में सफल रहा है। भारत की अफ्रीका में 18 नए दूतावास खोलने की योजना है।
- **आर्थिक प्रभाव:** भारत तथा अफ्रीका के मध्य व्यापार वर्तमान में 10 अरब अमेरिकी डॉलर का है।

- भारत ने भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (ITEC) पहल के तहत अफ्रीकी पेशेवरों की क्षमता निर्माण में तकनीकी सहायता और प्रशिक्षण हेतु 1 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश किया है।
- भारत ने पैन अफ्रीकी ई-नेटवर्क में 100 मिलियन डॉलर का निवेश किया है।
- भारत एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर के माध्यम से अफ्रीका का विकास कर सकता है।

- **सहायता अनुदान:** भारत ने अफ्रीका को 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का रियायती ऋण दिया है।
  - भारत ने 700 मिलियन अमेरिकी डॉलर की सहायता प्रदान की है।
  - भारत के ड्यूटी फ्री टैरिफ प्रीफरेंशियल स्कीम (2008) से अफ्रीका के 33 अल्प विकसित देशों को लाभ।
- **सुरक्षा सहयोग:** लगभग 6000 भारतीय सैनिक अफ्रीका के संघर्ष क्षेत्रों में संयुक्त राष्ट्र के शांति मिशनों में तैनात हैं।
- **चिकित्सा कूटनीति:** वैक्सीन मैत्री, भारत ने कोविड प्रबंधन रणनीतियों को साझा किया है।
- **बहु मोर्चों पर सहयोग:** इसमें सौर ऊर्जा विकास (ISA), सूचना प्रौद्योगिकी, साइबर सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा, आपदा राहत, आतंकवाद का मुकाबला और सैन्य प्रशिक्षण शामिल हैं।
- भारत हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA) का नेतृत्वकर्त्ता है। इसमें मेडागास्कर और कोमोरोस द्वीपीय सरकारें भी शामिल हैं।

चुनौतियाँ

- एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर का अभी भी ज़मीनी स्तर पर प्रभावी क्रियान्वयन नहीं।
- अफ्रीका में चीनी चुनौती/राजनीतिक अस्थिरता।
- व्यापार संबंधों में तेज़ी नहीं।

भारत और अफ्रीका के बीच अपार संभावनाएँ मौजूद हैं। अत: भारत को अफ्रीका महाद्वीप में निहित संभावनाओं का लाभ उठाने हेतु विभिन्न मोर्चों पर विभिन्न अफ्रीकी देशों के बीच सहयोग बढ़ाना चाहिये।

प्रश्न: एस.सी.ओ के लक्ष्यों और उद्देश्यों का विश्लेषणात्मक परीक्षण कीजिये। भारत के लिये इसका क्या महत्त्व है?

(250 शब्द, 15 अंक)

Critically examine the aims and objectives of SCO. What importance does it hold for India?

उत्तर: शंघाई सहयोग संगठन: यह एक स्थायी अंतर-सरकारी अंतर्राष्ट्रीय संगठन है। इसे वर्ष 2001 में बनाया गया था। यह एक यूरेशियन राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा संगठन है, जिसका लक्ष्य इस क्षेत्र में शांति, सुरक्षा तथा स्थिरता बनाए रखना है। इसमें 8 सदस्य हैं। भारत और पाकिस्तान 2017 में इसके सदस्य बने।

SCO के लक्ष्य एवं उद्देश्य

- सदस्य देशों के मध्य परस्पर विश्वास तथा सद्भाव को मज़बूत करना।
- राजनीतिक, व्यापारिक एवं आर्थिक अनुसंधान व प्रौद्योगिकी तथा संस्कृति में प्रभावी सहयोग को बढ़ावा देना।
- शिक्षा, ऊर्जा, परिवहन, पर्यटन, पर्यावरण, संरक्षण इत्यादि क्षेत्रों में संबंधों को बढ़ाना।
- संबंधित क्षेत्र में शांति, सुरक्षा व स्थिरता बनाए रखना तथा सुनिश्चितता प्रदान करना।
- एक लोकतांत्रिक, निष्पक्ष एवं तर्कसंगत नव-अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक व आर्थिक व्यवस्था की स्थापना।

चुनौतियाँ

- संगठन में शामिल देश मिलकर अलग-अलग एवं परस्पर विरोधी हितों का एक जटिल मैट्रिक्स बनाते हैं, जैसे– भारत-पाकिस्तान, रूस-चीन संबंध।
- **चीन की नीतियाँ:** चेक बुक पॉलिसी, वुल्फ वॉरियर डिप्लोमेसी, हॉन्गकॉन्ग मुद्दा।
- पाकिस्तान व चीन के दोहरे रवैये से क्षेत्रीय आतंकवाद-रोधी संरचना (RATS) की छवि धूमिल।
- सीमित भौगोलिक दायरा।
- पश्चिमी संशय और आलोचना।

भारत के लिये SCO का महत्त्व

- SCO में शामिल होने से भारत का अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व बढ़ा है।
- **ऊर्जा सुरक्षा:** मध्य एशिया में तेल एवं गैस के विशाल भंडार। भारत अपनी ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाने हेतु इनका दोहन करना चाहता है।
- भारत को मध्य एशिया के देशों से आर्थिक संबंधों का विस्तार करके। सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार बैंकिंग, वित्तीय तथा फार्मा उद्योगों आदि हेतु एक विशाल बाज़ार प्राप्त हो सकता है।
- 22वें शिखर सम्मेलन (2022) में हस्ताक्षरित समरकंद घोषणा।
- भारत यूरेशिया में चीन के बढ़ते प्रभाव को कम करने एवं चीन के साथ मिलकर अमेरिका को काउंटर करने का प्रयास भी कर सकता है।
- **सांस्कृतिक सहयोग:** SCO सदस्य देशों के किसी एक शहर को पर्यटन एवं सांस्कृतिक राजधानी के रूप में नामित करने का निर्णय।
- SCO की क्षेत्रीय आतंकवाद रोधी संरचना के माध्यम से भारत आतंकवाद, उग्रवाद और कट्टरपंथ का मुकाबला करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- काशी (वाराणसी) SCO की पहली सांस्कृतिक राजधानी।
- SCO क्षेत्रीय राज्यों के लिये एक आकर्षक मंच है। अत: इसकी चुनौतियों का समाधान कर इसे आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

प्रश्न: "संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन के रूप में एक ऐसे अस्तित्व के खतरे का सामना कर रहा है, जो तत्कालीन सोवियत संघ की तुलना में कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण है।" विवेचना कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

"The USA is facing an existential threat in the form of China, that is much more challenging than the ers"kwhile Soviet Union." Explain.

उत्तर: इराक और अफगानिस्तान से USA की वापसी ने USA की विश्व महाशक्ति की छवि को धूमिल किया है। साथ ही चीन की विस्तारवादी नीति और विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति ने USA के समक्ष चुनौतियाँ खड़ी की हैं।

- द्वितीय विश्वयुद्ध के समय विश्व दो खेमों (संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ) में बँट गया।
- सोवियत संघ समय के साथ विघटित हो गया।
- विघटन से पूर्व सोवियत संघ USA के लिये एक महत्त्वपूर्ण चुनौती था।
- पिछले दो दशकों से चीन के उदय ने अमेरिका के लिये अस्तित्व का खतरा उत्पन्न किया है।

चीन के सोवियत संघ से अधिकत मज़बूत होने के कारण

- व्यापक वैश्विक दृष्टिकोण तथा राजनीतिक स्थिरता।
- दक्ष मानव संसाधन तथा तकनीकी कुशलता।
- आर्थिक विकास एवं बेल्ट रोड इनिशिएटिव (BRI)।
- अमेरिकी-चीन व्यापार में चीन मज़बूत स्थिति में।
- महत्त्वपूर्ण देशों में चीन का बढ़ता निवेश।
- चेक बुक पॉलिसी तथा ऋण जाल से चीन को अधिक स्थायित्व।
- चीन क्षेत्रीय संगठनों, जैसे- एशियन इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक का एशियाई विकास बैंक के माध्यम से USA के प्रभुत्व को चुनौती दे रहा है।
- चीन-रूस की बढ़ती नज़दीकियाँ एवं अफगानिस्तान-पाकिस्तान-चीन का गठजोड़ भी USA के लिये अधिक चुनौतीपूर्ण है।

चीन की विस्तारवादी नीति ने USA के समक्ष राजनीतिक, आर्थिक, सुरक्षा एवं मूल्य संबंधी चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। हाल ही में चीन के खिलाफ अमेरिका का QUAD तथा AUKUS जैसे संगठनों में शामिल होना भी इस तथ्य को पुष्ट करता है।

निष्कर्षत: चीन की विस्तारवादी नीति का मुकाबला करने हेतु अमेरिका को प्रभावी व कुशल रणनीति की आवश्यकता है।

प्रश्न: भारत-प्रशांत महासागर क्षेत्र में चीन की महत्त्वाकांक्षाओं का मुकाबला करना नई त्रि-राष्ट्र साझेदारी AUKUS का उद्देश्य है। क्या यह इस क्षेत्र में मौजूदा साझेदारी का स्थान लेने जा रहा है? वर्तमान परिदृश्य में, AUKUS की शक्ति और प्रभाव की विवेचना कीजिये। (250 शब्द, 15 अंक)

The newly tri-nation partnership AUKUS is aimed at countering China's ambitions in the Indo-Pacific region. Is it going to supersede the existing partnerships in the region? Discuss the strength and impact of AUKUS in the present scenario.

उत्तर: AUKUS ऑस्ट्रेलिया-यूके और यूएस के बीच हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिये एक त्रिपक्षीय सुरक्षा साझेदारी है, जिस पर वर्ष 2021 में हस्ताक्षर किये गए थे।

AUKUS पर इस क्षेत्र में मौजूदा विभिन्न समूहों, जैसे- फाइव आइज (USA, UK, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और न्यूज़ीलैंड), QUAD, ASEAN एवं USA के नेतृत्व वाले एंग्लो-सेक्सन सहयोगियों के गठबंधन आदि का स्थान लेने के आरोप लगाए जा रहे हैं। हालाँकि AUKUS का उद्देश्य चीन की प्रतिद्वंद्विता का मुकाबला करना है।

AUKUS की शक्ति एवं प्रभावों को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है

- AUKUS का उद्देश्य तकनीकी साझा कर ऑस्ट्रेलिया को परमाणु पनडुब्बी संपन्न राष्ट्र बनाना है।
- इसका उद्देश्य सदस्यों की सैन्य क्षमताओं को मज़बूत करके चीन के प्रति एक विश्वसनीय प्रतिरोधक शक्ति प्रदान करना है।
- यह इस क्षेत्र में मानदंडों और नियम-आधारित व्यवस्था की बहाली के साथ सदस्यों की गश्त और निगरानी शक्ति को बढ़ाएगा।
- साथ ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम टेक्नोलॉजी, साइबर सुरक्षा आदि के उभरते हुए डोमेन में समान विचारधारा वाले देशों की क्षमताओं को भी बढ़ाएगा।

AUKUS के समक्ष चुनौतियाँ

- इसके गठन में फ्राँस की अनदेखी, समान विचारधारा वाले लोकतांत्रिक देशों के बीच विश्वास की कमी को बढ़ा सकता है।
- हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नई शक्तियों के प्रवेश के साथ ही यह भारत के 'सागर विज़न' के लिये प्रतिकूल भी हो सकता है।
- AUKUS साझेदारी को विशेषरूप से चीन द्वारा क्षेत्र की सुरक्षा और स्थिरता के लिये एक चुनौती के रूप में देखा जाता है।
- अन्य देशों को अपनी परमाणु क्षमताओं को आगे बढ़ाने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है।

भले ही AUKUS को 'इंडो-पैसिफिक नाटो' की संज्ञा दी जा रही है, लेकिन यह इस क्षेत्र की शांति भारत सहित अन्य देशों की शांति, सुरक्षा और स्थिरता के लिये महत्त्वपूर्ण है। अत: इस क्षेत्र के सभी देशों को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र महाशक्तियों का 'गोल्फ कोर्स' बनकर न रह जाए।

2020

प्रश्न: 'चतुर्भुजीय सुरक्षा संवाद (Quad)' वर्तमान समय में स्वयं को सैनिक गठबंधन से एक व्यापारिक गुट में रूपांतरित कर रहा है। विवेचना कीजिये। (260 शब्द, 15 अंक)

'Quadrilateral Security Dialogue (Quad)' is transforming itself into a trade bloc from a military alliance, in present times. Discuss.

उत्तर: क्वाड का विचार पहली बार वर्ष 2007 में जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने रखा था। अंततः वर्ष 2017 में भारत, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका और जापान ने एक साथ आकर इस 'चतुर्भुज' गठबंधन का गठन किया। यह 'हिंद-प्रशांत संकल्पना' को स्वरूप देने के उद्देश्य से एक 'मुक्त, खुले और समृद्ध' हिंद-प्रशांत क्षेत्र का समर्थन करता है।

क्वाड सैनिक गठबंधन के रूप में

- भारत और जापान ने इस क्षेत्र में चीन का मुकाबला करने हेतु 10 वर्ष के सैन्य समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं। यह सशस्त्र बलों के बीच सहयोग को बढ़ाएगा।
- मालाबार नौसैनिक अभ्यास (2020) में 13 वर्ष बाद पुनः ऑस्ट्रेलिया शामिल हुआ है।
- ऑस्ट्रेलिया ने प्रशांत क्षेत्र में समुद्री और सैन्य बुनियादी ढाँचे का निर्माण करने हेतु महत्त्वाकांक्षी 2 बिलियन डॉलर की परियोजना का अनावरण किया है।
- चीन क्वाड को अपने खिलाफ लक्षित सैनिक गठबंधन के रूप में देखता है।
- क्वाड समूह हिंद प्रशांत क्षेत्र की भू-राजनीति का एक महत्त्वपूर्ण घटक बनकर उभरा है।

क्वाड का व्यापारिक गुट में रूपांतरण

- अमेरिका द्वारा 'फाइव आइज़' नामक सूचना गठबंधन में भारत को शामिल करने का प्रस्ताव।
- कोविड महामारी से निपटने हेतु समन्वित प्रयासों के लिये क्वाड प्लस की शुरुआत।
- चीन पर निर्भरता कम करने हेतु भारत द्वारा जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर मज़बूत आपूर्ति श्रृंखला को विकसित किया जा रहा है।
- भारत और जापान ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र में संयुक्त परियोजनाओं हेतु एशिया-अफ्रीका विकास गलियारा की घोषणा की है।
- वैश्विक बुनियादी ढाँचे के विकास हेतु उच्च-गुणवत्ता, विश्वसनीय मानकों को बढ़ावा देने के लिये सरकारों, निजी क्षेत्रों और नागरिक समाज को एक साथ लाने हेतु 'ब्लू डॉट नेटवर्क' पहल की शुरुआत। यह सीधेतौर पर चीन के BRI का मुकाबला कर सकता है।
- भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया ने 'सप्लाई चेन रेजीलियन्स इनिशिएटिव' (SCRI) की शुरुआत की है।

इस प्रकार हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभुत्व को प्रतिसंतुलित करने के उद्देश्य से बना क्वाड समूह सैन्य समझौते के अलावा अपने व्यापारिक संबंधों को तेज़ी से आगे बढ़ा रहा है।

प्रश्न: भारत-रूस रक्षा समझौते की तुलना में भारत-अमेरिका रक्षा समझौते की क्या महत्ता है? हिंद-प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में स्थायित्व के संदर्भ में विवेचना कीजिये।

(250 शब्द, 15 अंक)

What is the significance of Indo-US defence deals over Indo-Russian defence deals? Discuss with reference to stability in the Indo-Pacific Region.

उत्तर: रूस भारत के रक्षा क्षेत्र के लिये आवश्यक हथियारों एवं गोला-बारूद का प्रमुख आपूर्तिकर्त्ता रहा है। हालाँकि रूस आमतौर पर हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की तरह क्वाड की आलोचना भी करता है। अमेरिका द्वारा 'हिंद-प्रशांत रणनीति' का उपयोग किया जा रहा है। अमेरिका सामरिक रूप से महत्त्वपूर्ण हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बृहद् भारत-अमेरिकी सहयोग की हिमायत कर रहा है।

इस प्रकार हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत की सोच के साथ अमेरिकी सोच की साम्यता इस क्षेत्र में अमेरिकी रणनीति में भारत की अहमियत को दर्शाती है।

रक्षा समझौता

भारत-रूस	भारत-अमेरिका
❑ भारत को पहली पनडुब्बी सोवियत संघ से प्राप्त हुई थी। ❑ भारत को रूस द्वारा परमाणु पनडुब्बी 'INS चक्र (SSN)' प्रदान की गई है ❑ विमान वाहक पोत 'INS विक्रमादित्य (2013)' एक सोवियत निर्मित कीव श्रेणी का पोत है। ❑ भारत ब्रह्मोस का निर्यात शुरू करेगा। ब्रह्मोस उत्पादन इकाई की आधारशिला लखनऊ में रखी गई है। ❑ भारत और रूस के मध्य S-400 ट्रायम्फ एयर-डिफेंस सिस्टम डील। ❑ भारतीय वायुसेना का लड़ाकू विमान 'सुखोई' रूस निर्मित है।	❑ अमेरिका ने भारत के साथ चार प्रमुख बुनियादी रक्षा समझौतों पर हस्ताक्षर किये हैं। ❑ GSOMIA समझौता दोनों देश के मध्य हथियारों और अन्य सैन्य संसाधनों की खरीद-फरोख्त को बढ़ावा देता है। ❑ LEMOA समझौता के अंतर्गत दोनों देश एक-दूसरे के सैन्य संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं। ❑ COMCASA समझौता अर्थात् संचार सुरक्षा समझौता विशेषकर भारत के हितों को ध्यान में रखकर किया गया है। ❑ भारत और अमेरिका ने बेसिक एक्सचेंज को-ऑपरेशन एग्रीमेंट (BELA) पर हस्ताक्षर किये हैं। इससे भारत को अमेरिका के गोपनीय जियो स्पैटियल और GIS डाटा हासिल करने का रास्ता साफ हो गया है। ❑ वर्ष 2023 में दोनों देश 'आपूर्ति की सुरक्षा' और 'पारस्परिक रक्षा खरीद' पर बातचीत करने हेतु सहमत हुए हैं।

	❑ US-इंडिया डिफेंस एक्सलेरेशन इकोसिस्टम (INDUS-X) पहल को दोनों देश शुरू करेंगे।

भारत हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक प्रमुख शक्ति है जो चीन की सैन्य और आर्थिक प्रगति को संतुलित कर सकता है। अमेरिका ने चीन को प्रत्यक्ष रूप से चुनौती देने की बजाय इस क्षेत्र में सभी हितधारकों को साथ लाने की भारतीय नीति का समर्थन किया है। वहीं दूसरी ओर अमेरिका परमाणु आपूर्तिकर्त्ता समूह और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का समर्थन करता है। इस प्रकार इस रणनीतिक क्षेत्र में भारत-अमेरिका रक्षा सहयोग रूस और भारत के रक्षा सहयोग की तुलना में भारत के हितों को साधने में आर्थिक रूप से सहायक है।

प्रश्न: कोविड-19 महामारी के दौरान वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करने में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की भूमिका का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

Critically examine the role of WHO in providing global health security during the Covid-19 pandemic.

उत्तर: विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) एक अंतर-सरकारी संगठन है तथा सामान्यत: अपने सदस्य राष्ट्रों के स्वास्थ्य मंत्रालयों के सहयोग से कार्य करता है। यह वैश्विक स्वास्थ्य मामलों पर नेतृत्व प्रदान करते हुए स्वास्थ्य अनुसंधान संबंधी एजेंडा को आकार देकर विभिन्न मानदंड एवं मानक निर्धारित करता है। कोविड-19 के दौरान यह संगठन समय-समय पर दिशा-निर्देश जारी करता रहा, ताकि इस महामारी से बचाव को सुनिश्चित किया जा सके।

कोविड-19 के दौर में WHO की भूमिका

- वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करने में WHO ने मुख्य भूमिका निभाई है।
- WHO ने सरकारों, स्वास्थ्य कर्मियों और आम जनता के लिये महामारी से संबंधित सूचना और मार्गदर्शन देने के संदर्भ में प्रभावी सेवा प्रदान की है।
- कोविड महामारी के प्रसार को रोकने हेतु अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों का समन्वय किया व ग्लोबल अलर्ट एंड रिस्पॉन्स सिस्टम की स्थापना की।
- सभी देशों को तकनीकी सहायता प्रदान की, ताकि वे अपने स्वास्थ्य तंत्र को मज़बूत करें और महामारी के प्रभावों को कम कर सकें।
- वैक्सीन के निर्माण व वितरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

आलोचना

- महामारी की शुरुआत में WHO की भूमिका के कारण ही दुनिया में इस वायरस को लेकर गलत सूचनाओं का प्रसार हुआ।
- शुरुआत में WHO ने यात्रा पर पाबंदियाँ न लगाने की सलाह देकर कोविड-19 को वैश्विक आपातकाल घोषित करने में भी देरी की।
- WHO दुनिया को इस महामारी के प्रति चेतावनी देने में नाकाम रहा परिणामस्वरूप दुनिया के हज़ारों लोगों के लिये यह जानलेवा साबित हुआ।
- जब सारे सबूत चीन की प्रतिबद्धता के विरुद्ध थे, तब WHO चीन की इस प्रतिबद्धता की तारीफ कर रहा था।
- इसी संदर्भ में अमेरिका ने WHO पर आरोप लगाया है कि उसकी तमाम गुज़ारिशों के बाद भी विश्व स्वास्थ्य संगठन अपने भीतर ज़रूरी सुधार करने में असफल रहा है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में विश्व स्वास्थ्य संगठन का वैश्विक नेतृत्व खतरे में है। वैश्विक स्तर पर अपनी नेतृत्वकारी भूमिका के प्रति विश्वास और पारदर्शिता का माहौल पुनर्निर्मित करने के लिये इस संगठन में पर्याप्त सुधारों की आवश्यकता है।

प्रश्न: "अमेरिका एवं यूरोपीय देशों की राजनीति और अर्थव्यवस्था में भारतीय प्रवासियों को एक निर्णायक भूमिका निभानी है।" उदाहरणों सहित टिप्पणी कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

'Indian diaspora has a decisive role to play in the politics and economy of America and European Countries'. Comment with examples.

उत्तर: विदेशों में प्रवासी भारतीयों को न केवल उनकी संख्या की वजह से जाना जाता है, बल्कि उनके योगदान के लिये उन्हें सम्मानित किया जाता है। भारत के लगभग 31.2 मिलियन लोग दुनिया के 146 देशों में निवास करते हैं।

राजनीति में प्रवासी भारतीयों का योगदान

- 'भारतीय डायस्पोरा' भारतीय सॉफ्ट डिप्लोमेसी का एक महत्त्वपूर्ण भाग है।
  - भारतीय प्रवासियों द्वारा भारत-अमेरिकी परमाणु समझौता में निर्णायक भूमिका निभाई गई थी।
- भारतीय मूल के कई लोग कई देशों में शीर्ष राजनीतिक पदों पर आसीन हैं जैसे- कमला हैरिस (अमेरिका की उप-राष्ट्रपति), वेवेल रामकलावन (सेशेल्स के राष्ट्रपति), ऋषि सुनक (ब्रिटेन के प्रधानमंत्री)।
- 30 से अधिक लोग, अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के प्रशासन में विभिन्न ज़िम्मेदारियाँ संभाल रहे हैं।

अर्थव्यवस्था में प्रवासी भारतीयों का योगदान

- प्रवासी भारतीयों ने देश की वृद्धि और विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है उदाहरणस्वरूप- सिलिकन वैली भारतीयों की सफलता को दर्शाता है।
- व्यापार और निवेश में भी प्रवासी भारतीयों की मुख्य भूमिका है।
- भारतीय प्रवासी प्रेषण प्रवाह के बड़े स्रोत हैं, जो पूंजी खाते के संतुलन में सहायक हैं।
- इटली के सामाजिक-आर्थिक विकास तथा गरीबी उन्मूलन में सहायक लगभग 2 लाख से अधिक भारतीय प्रवासी डेयरी, कृषि और घरेलू सेवा क्षेत्रों में अपनी भागीदारी निभा रहे हैं।

- वर्तमान में भारतीय युवाओं का उच्च प्रतिशत विज्ञान और प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित के क्षेत्र में विभिन्न देशों में कार्यरत् है।

आज भारतीय प्रवासी पहले से अधिक समृद्ध हैं और भारत के विकास में उनकी भागीदारी बढ़ रही है। इस संदर्भ में भारत को डायस्पोरा डिप्लोमेसी को पूरी तरह से तैयार करना चाहिये, ताकि डायस्पोरा क्षमता को डायस्पोरा डिविडेंड में बदला जा सके।

2019

प्रश्न: 'आवश्यकता से कम नगदी, अत्यधिक राजनीति ने यूनेस्को को जीवन-रक्षण की स्थिति में पहुँचा दिया है।' अमेरिका द्वारा सदस्यता परित्याग करने और सांस्कृतिक संस्था पर 'इज़राइल विरोधी पूर्वाग्रह' होने का दोषारोपण करने के प्रकाश में इस कथन की विवेचना कीजिये।

(150 शब्द, 10 अंक)

'Too little cash, too much politics, leaves UNESCO fighting for life.' Discuss the statement in the light of US' withdrawal and its accusation of the cultural body as being 'anti-Israel bias'.

उत्तर: यूनेस्को की स्थापना 1945 में इस दृढ़ विश्वास के साथ की गई थी कि विश्व शांति की स्थापना के लिये केवल राजनीतिक और आर्थिक गठबंधन भर ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि इस अर्थ में शांति को मानवता और एक-दूसरे के साथ हमारी नैतिक व बौद्धिक एकजुटता के आधार पर स्थापित किया जाना चाहिये। यूनेस्को की समस्याओं के मूल में वर्ष 2011 से जारी वित्त पोषण संकट है।

यूनेस्को के जीवन-रक्षण में पहुँचने के कारण

- अमेरिका और इज़राइल ने 2017 में अपनी सदस्यता को त्यागने के लिये नोटिस दायर किया था।
- अमेरिका द्वारा यूनेस्को की सदस्यता परित्याग की घोषणा ने एक बार पुनः इसकी गतिविधियों के राजनीतिकरण और इसके कोष की सीमितता को उजागर किया है।
- यूनेस्को का 2011 में फिलिस्तीन को पूर्ण सदस्यता प्रदान करना व प्राचीन यहूदी स्थलों को फिलिस्तीनी विरासत स्थलों के रूप में नामित करना। जिसके कारण दोनों देशों ने यूनेस्को पर इज़राइल विरोधी पूर्वाग्रह रखने का आरोप लगाया है।
- इसी संदर्भ में प्रतिक्रिया स्वरूप वाशिंगटन ने यूनेस्को के 80 मिलियन डॉलर के बकाया भुगतान पर रोक लगा दी।
- जापान, ब्रिटेन और ब्राज़ील जैसे अन्य प्रमुख योगदानकर्त्ता भी यूनेस्को की नीतियों का विरोध करते हुए वित्त प्रदान करने में देरी करते हैं।
- क्रीमिया के प्रश्न पर रूस और यूक्रेन में शत्रुता रही है, जहाँ कीव ने मॉस्को पर आरोप लगाया है कि वह क्रीमिया पर कब्ज़े को यूनेस्को के माध्यम से वैध बनाने का प्रयास कर रहा है।

प्रभाव

- अमेरिकी वित्त पोषण के अभाव में यूनेस्को को अपने कार्यक्रमों में कटौती करने, नियुक्तियों पर रोक लगाने और प्राप्त स्वैच्छिक योगदान से वित्तीय पूर्ति करने के लिये विवश होना पड़ा।
- यूनेस्को का 2017 का बजट लगभग 326 मिलियन डॉलर का था, जो वर्ष 2012 के बजट का लगभग आधा था, परिणामस्वरूप कर्मचारियों की आजीविका का संकट।

वस्तुस्थिति यह है कि यूनेस्को, देशों की एकजुटता का प्रतिबिंबन था और देशों के बीच शांति के लिये एक परिवेश की रचना करता था, लेकिन उसके कार्यक्रमों को प्रभावित करने के लिये विभिन्न राष्ट्र अब वित्त पोषण की 'ब्लैकमेलिंग' करने लगे हैं। साझा मानव विरासत के संरक्षण के लिये सभी देशों की संलग्नता के साथ एक ठोस प्रयास की आवश्यकता है और इसके लिये राष्ट्रों को राजनीति का 'जीरो-सम गेम' खेलना छोड़ देना चाहिये।

प्रश्न: "उभरती हुई वैश्विक व्यवस्था में, भारत द्वारा प्राप्त नव-भूमिका के कारण, उत्पीड़ित एवं उपेक्षित राष्ट्रों के मुखिया के रूप में दीर्घकाल से संपोषित भारत की पहचान लुप्त हो गई है।" विस्तार से बताएँ। (250 शब्द, 15 अंक)

"The long sustained image of India as a leader of the oppressed and marginalised nations has disappeared on account of its new found role in the emerging global order.' Elaborate

उत्तर: गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के संस्थापक सदस्य के रूप में भारत ने उपनिवेशित विश्व के नवस्वतंत्र देशों के मध्य किसी भी शक्तिशाली राष्ट्र के साथ गठबंधन नहीं करने की अपनी दृष्टि का प्रसार किया, क्योंकि ये नवस्वतंत्र राष्ट्र सैन्य, आर्थिक एवं विकास संबंधी पहलुओं के संदर्भ में अशक्त थे। गुटनिरपेक्षता, शांतिपूर्ण सहयोग तथा सह-अस्तित्व, साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद के अंत के इन विचारों ने भारत को हाशिये के देशों के नेतृत्वकर्त्ताओं में से एक बना दिया। इसे निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है–

- शीत युद्ध के दौर में।
- WTO के दोहा दौर में लघु अर्थव्यवस्थाओं के हितों का समर्थन करना।
- जलवायु परिवर्तन वार्ताओं के दौरान सुभेद्य देशों के पक्ष का समर्थन करना।
- G-77 के माध्यम से अपने विचारों को प्रकट करना।

भारत में रणनीतिक विदेश नीति परिप्रेक्ष्य के प्रति इसके दृष्टिकोण में परिवर्तन

- वर्तमान में विश्व शक्ति के रूप में आर्थिक विकास भारत के विकास का एक प्रमुख एजेंडा है, जो अब भारत की विदेश नीति में परिलक्षित होता है।

- भारत ने NAM शिखर सम्मेलन हवाना, 2006 में आतंकवाद विरोधी, परमाणु निरस्त्रीकरण, ऊर्जा सुरक्षा, अफ्रीका में निवेश तथा ऐसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया जो देश के विकास के लिये महत्त्वपूर्ण है और विकासशील या हाशिये के देशों की प्राथमिकताओं के समरूप नहीं है।
- भारत हमेशा जलवायु परिवर्तन वार्ताओं में 'विभेदित दायित्व' का समर्थन करता है, परंतु पेरिस वार्ता के दौरान भारत ने अपना रुख बदल लिया है।
- भारत पड़ोसी देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने के लिये भी दोषी ठहराया जाता है, उदहारण के लिये- नेपाल का मधेसी विवाद।
- 'सार्क' में भारत ने पाकिस्तान के बहिष्कार के अपने एजेंडे को अत्यधिक महत्त्व दिया, परिणामस्वरूप सार्क निष्प्रभावी हो गया। फलतः अब छोटे पड़ोसी राष्ट्रों में सार्क की विकास परियोजनाओं में देरी हो सकती है।
- क्वाड में भारत की भागीदारी के माध्यम से हिंद-प्रशांत क्षेत्रीय विकास और चीन से मुकाबला करना भारत की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

स्पष्ट है कि भारत विश्व गुरु बनने की राह पर है, किंतु यह कहना कि भारत का दृष्टिकोण पूर्णतया आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर बढ़ रहा है, प्रासंगिक नहीं है।

प्रश्नः भारत और यूनाइटेड स्टेट्स के बीच संबंधों में खटास के प्रवेश का कारण वाशिंगटन की अपनी वैश्विक रणनीति में अभी तक भी भारत के लिये किसी ऐसे स्थान की खोज करने में विफलता है, जो भारत के आत्म-समादर और महत्त्वाकांक्षा को संतुष्ट कर सके। उपर्युक्त उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिये। (250 शब्द, 15 अंक)

What introduces friction into the ties between India and the United States is that Washington is still unable to find for India a position in its global strategy, which would satisfy India's national self-esteem and ambitions'. Explain with suitable examples.

उत्तरः 2016 में यूनाइटेड स्टेट्स ने भारत को 'प्रमुख रक्षा साझेदार' के रूप में नामित किया है, जो भारत के लिये एक अद्वितीय परिस्थिति है। हालाँकि, वर्तमान में अमेरिकी विदेश एवं आर्थिक नीतियाँ भारत के आत्म-सम्मान तथा महत्त्वाकांक्षाओं के विरुद्ध प्रतीत होने लगी हैं।

पश्चिम एशिया

- अमेरिका की पश्चिम एशिया की नीति इज़राइल और सऊदी अरब के अनुरूप है, जो ईरान की नीतियों के प्रतिकूल है।
- ईरान भारत के लिये मज़बूती, एकजुटता तथा शांतिपूर्ण तेल आयात, चाबहार बंदरगाह और अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा के उद्देश्य से महत्त्व रखता है। यह चीन के BRI के प्रभाव को कम करने में सहायक है।
- अमेरिका ने ईरान पर CAATSA के तहत प्रतिबंध आरोपित किये हैं।

अफगानिस्तान

- अफगानिस्तान में भारत के हित मौजूद हैं। अतः भारत अफगानिस्तान को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक विकास के पथ पर अग्रसर तथा स्थायी रूप से सुरक्षित देखना चाहता है।
- अमेरिकी नीति अपने सैनिकों की अफगानिस्तान से वापसी पर ध्यान केंद्रित करने की दिशा में आगे बढ़ी है। तालिबान के साथ किसी भी प्रकार का सुरक्षा समझौता आतंकवादी गतिविधियों को वैध ठहराएगा तथा भारत के हितों को चोट पहुँचाएगा।

रूस

- रूस के साथ भारत के सामरिक संबंध महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी रहे हैं। वहीं रूस भारत का प्रमुख रक्षा भागीदार है, जिसे वीटो की शक्ति प्राप्त है।
- शीत युद्ध के कारण अमेरिका रूस को अपना विरोधी मानता है। इस कारण उसने CAATSA के अंतर्गत रूस को शामिल किया है। अतः अमेरिका रूस के साथ एस-400 मिसाइल प्रणाली में शामिल भारत के रक्षा सौदों के विरोध में खड़ा है।

व्यापारिक संबंध

- भारत एक विकासशील देश है तथा वैश्विक स्तर पर एक मज़बूत आर्थिक स्थिति बनाना चाहता है, किंतु अमेरिका की सामान्यीकृत वरीयता प्रणाली (GSP) भारत के लिये एक उपयोगी तंत्र है, लेकिन नौकरियों में घरवापसी नीति लाने तथा चीन के विकास पथ को नियंत्रित करने की अमेरिका की नीति का भारत पर नाकरात्मक प्रभाव पड़ा है।

अमेरिका की राष्ट्रीय रक्षा रणनीति, 2018 ने रूस और चीन को अपनी केंद्रीय चुनौती के रूप में चिह्नित किया है। भारत द्वारा अमेरिका को यह विश्वास दिलाना चाहिये साथ ही भारत को महाशक्तियों के साथ संबंध बनाते समय 'रणनीतिक प्रतिरक्षा' का पालन करना चाहिये, क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में स्थायी मित्र या शत्रु नहीं होते हैं, केवल स्थायी हित होते हैं।

प्रश्नः 'भारत और जापान के लिये समय आ गया है कि एक ऐसे मज़बूत समसामयिक संबंध का निर्माण करें, जिसका वैश्विक एवं रणनीतिक साझेदारी को आवेशित करते हुए एशिया एवं संपूर्ण विश्व के लिये बड़ा महत्त्व होगा।' टिप्पणी कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

'The time has come for India and Japan to build a strong contemporary relationship, one involving global and strategic partnership that will have a great significance for Asia and the world as a whole.' Comment.

उत्तरः भारत और जापान के बीच मित्रता का एक लंबा इतिहास रहा है। भारत-जापान साझेदारी को एशिया में सबसे तेज़ी से आगे बढ़ते संबंध के रूप में देखा जा रहा है, जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र की स्थिरता और सुरक्षा में योगदान कर रहा है। दोनों देश के मध्य प्रगाढ़ राजनैतिक और आर्थिक संबंध हैं।

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के तेज़ उभार का रणनीतिक परिदृश्य भारत-जापान साझेदारी को बृहद् संवेग प्रदान कर रहा है। रणनीतिक अभिसरण के माध्यम से जापान और भारत दोनों ही एशिया के शक्ति-संतुलन को पुनर्स्थापित करना चाहते हैं। निम्नलिखित पहलों में इस भावना को परिलक्षित किया जा सकता है–

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग

- यह भारत की 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' और जापान की 'फ्री एंड ओपन इंडो-पैसिफिक' रणनीति के बीच संगम है।
- यह विधि के शासन और नौपरिवहन की स्वतंत्रता को सुदृढ़ करेगा।
- यह जापान और आसियान देशों के साथ भारत के सहयोग को बढ़ाएगा।

एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (AAGC)

- जापान एशिया-अफ्रीका क्षेत्र में लगभग 200 बिलियन डॉलर का निवेश करना चाहता है।
- इस परियोजना में जापान अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी प्रदान करेगा और भारत अफ्रीका में कार्य करने की अपनी विशेषज्ञता का निवेश करेगा।

क्वाड (जापान, अमेरिका, भारत, ऑस्ट्रेलिया)

- क्वाड एक रणनीतिक मोर्चे के रूप में सामने आया है, जिसे चीन का मुकाबला करने के लिये एक अनौपचारिक संगठन के रूप में देखा जाता है।

रक्षा

- धर्म गार्जियन और मालाबार सैन्य अभ्यास। 'मिलन' अभ्यास में पहली बार जापान की भागीदारी।
- जापान नार्थ-ईस्ट रोड कनेक्टिविटी सुधार परियोजना पर कार्य कर रहा है।
- भारत और जापान क्रॉस-सर्विस समझौतों पर बातचीत कर रहे हैं, ताकि एक-दूसरे की सैन्य सुविधाओं तक पहुँच को सक्षम बनाया जा सके।
- जापान भारत में विकास गुणक (Development Multiplier) साबित हो सकता है।

आर्थिक संलग्नता

जापान का भारत की आधारभूत संरचना में निवेश, जैसे- दिल्ली-मुंबई आर्थिक गलियारा, बुलेट ट्रेन, दिल्ली मेट्रो आदि।	G-4 (भारत, जापान, जर्मनी, ब्राज़ील) देश संयुक्त राष्ट्र परिषद में सुधारों की मांग कर रहे हैं।	भारत ने जापान के साथ असैन्य परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं।

अत: भारत को जापान के साथ एक स्वतंत्र संबंध में विकास करना चाहिये, जिसे चीन, अमेरिका या किसी अन्य देश के संदर्भ में नहीं देखा जाए।

2018

प्रश्न: "भारत के इज़राइल के साथ संबंधों ने हाल में एक ऐसी गहराई एवं विविधता प्राप्त कर ली है, जिसकी पुनर्वापसी नहीं की जा सकती है।" विवेचना कीजिये।

(150 शब्द, 10 अंक)

"India's relations with Israel have, of late, acquired a depth and diversity, which cannot be rolled back." Discuss.

उत्तर: भारत-इज़राइल संबंध सर्वाधिक तीव्र गति से बढ़ते हुए संबंध हैं। भारत की 'व्यावहारिक नीति' के परिणामस्वरूप तथा साझे राष्ट्रीय हितों के कारण दोनों देशों के संबंधों ने गहराई एवं विविधता प्राप्त कर ली है। यही कारण है कि कुछ विद्वान दोनों देशों को 'प्राकृतिक मित्र' की संज्ञा देते हैं।

भारत के इज़राइल के साथ संबंधों की गहराई एवं विविधता को सामरिक, तकनीकी, आर्थिक, रक्षा सहायक आदि संदर्भों में देखा जा सकता है

- रूस एवं अमेरिका के बाद इज़राइल भारत के लिये रक्षा सामग्री की आपूर्ति करने वाला तीसरा सबसे बड़ा देश बन गया है। भारत-इज़राइल के मध्य सीमा सुरक्षा प्रबंध की तकनीकी और आतंकवाद का सामना करने की साझा रणनीति पर विशेष ज़ोर दिया जा रहा है। दोनों देशों के बीच आसूचना पर भी सहयोग हो रहा है। आतंकवाद की समस्या हेतु दोनों देशों के मध्य एक संयुक्त कार्यदल की स्थापना हुई, जिसके द्वारा दोनों देशों के मध्य प्रशिक्षण, सूचना और हथियारों के आदान-प्रदान में भी सहयोग किया जा रहा है।
- भारत-इज़राइल के मध्य रक्षा संबंध केवल क्रेता-विक्रेता तक सीमित नहीं है, बल्कि हथियारों का साझा उत्पादन, जैसे- बराक प्रक्षेपास्त्र और 'ड्रोन' जैसी संवेदनशील तकनीक भी इज़राइल भारत को दे रहा है। साइबर सुरक्षा में भी दोनों के मध्य सहयोग जारी है।
- कूटनीतिक संबंधों के बाद आर्थिक सहयोग के क्षेत्र में द्विपक्षीय व्यापार में तीव्र वृद्धि हुई है। भारत का उभरता हुआ बाज़ार इज़राइल के लिये एक अवसर है, जबकि भारत को इज़राइल से बेहतर तकनीक प्राप्त हो सकती है और निवेश की भी संभावना है। दोनों ने एक-दूसरे को सर्वाधिक वरीय राष्ट्र का दर्जा दिया है।
- इज़राइल के विकसित एवं तकनीकी राष्ट्र होने के कारण दोनों देशों के मध्य कृषि, पर्यावरण, स्वास्थ्य, संचार क्षेत्र में भी सहयोग देखा जा सकता है। इसके अलावा, संबंधों की गहराई एवं विविधता को दोनों के बीच नागरिकों के आदान-प्रदान, अर्थात् पर्यटन के रूप में देख सकते हैं।

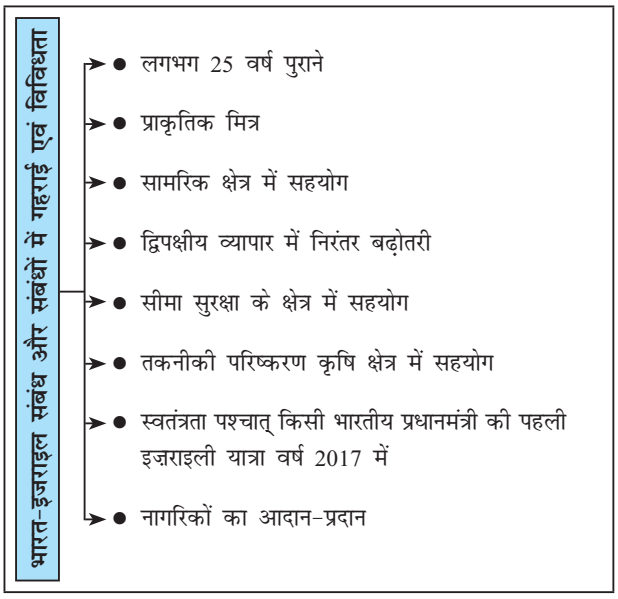

इज़राइल के साथ भारत के बढ़ते संबंध व्यावहारिकता और उभरते वैश्विक परिदृश्य पर आधारित हैं और आपसी निर्भरता एवं विश्वास उस हद तक बढ़ गया है, जहाँ से इसे वापस नहीं लिया जा सकता है। हालाँकि, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और मानवाधिकारों के मूल्य के आधार पर, भारत ने आमतौर पर फिलिस्तीनियों की संवेदनशीलता पर सावधानीपूर्वक ध्यान देते हुए अपनी इज़राइल नीति का संचालन किया है और फिलिस्तीन मुद्दे के शांतिपूर्ण एवं लोकतांत्रिक समाधान की वकालत की है।

अतिरिक्त सूचना

- इज़राइल भारत के नेतृत्व वाले अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) में भी शामिल हो रहा है, जिससे दोनों देशों के ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग बढ़गा और स्वच्छ ऊर्जा में भागीदारी के उद्देश्यों के साथ-साथ दोनों देश आगे बढ़ेंगे।
- मई 2021 में कृषि विकास में सहयोग के लिये तीन वर्ष के कार्य समझौते पर हस्ताक्षर किये गए थे।
- भारतीय सशस्त्र बलों ने पिछले कुछ वर्षों में इज़राइली हथियार प्रणालियों की एक विस्तृत श्रृंखला को अपने बेड़े में शामिल किया है, जैसे- फाल्कन 'AWACS' और हेरान, स्पाइस 2000 बम आदि हैं।

प्रश्न: मध्य एशिया, जो भारत के लिये एक हित क्षेत्र है, में अनेक बाह्य शक्तियों ने अपने-आप को संस्थापित कर लिया है। इस संदर्भ में भारत द्वारा अश्गाबात करार, 2018 में शामिल होने के निहितार्थों पर चर्चा कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

A number of outside powers have entrenched themselves in Central Asia, which is a zone of interest to India. Discuss the implications, in this context, of India's joining the Ashgabat Agreement, 2018.

उत्तर: वैश्विक वर्चस्व की तलाश में मध्य एशिया क्षेत्रीय और विश्व शक्तियों के बीच 'नए महान खेल' का हिस्सा बन गया है। ऊर्जा और खनिज संसाधनों से समृद्ध होने के कारण यह क्षेत्रीय और वैश्विक व्यापार के लिये ट्रांजिट कॉरिडोर के रूप में कार्य करता है। साथ ही मध्य एशियाई भीतरी इलाकों पर नियंत्रण फारस की खाड़ी जैसे परिधीय क्षेत्रों पर रणनीतिक वर्चस्व प्रदान करता है।

नतीजतन, अमेरिका जैसी प्रमुख शक्तियों के पास क्षेत्र में सैन्य ठिकाने हैं, जबकि चीन बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के माध्यम से यूरोप के लिये कनेक्टिविटी परियोजनाओं का निर्माण कर रहा है, लेकिन इस क्षेत्र में भारत की भी बड़ी हिस्सेदारी है, क्योंकि यह क्षेत्रीय शक्ति के रूप में भारत की महत्त्वाकांक्षा, ऊर्जा हासिल करने और व्यापार पारगमन की ज़रूरतों के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।

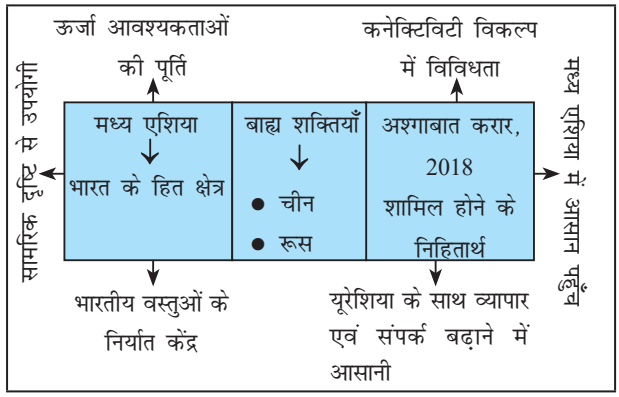

अश्गाबात समझौते में शामिल होने के निहितार्थ

- यूरेशियन आर्थिक संघ और शंघाई संगठन के साथ बेहतर एकीकरण के माध्यम से यूरेशियन क्षेत्र के साथ व्यापार और वाणिज्य बातचीत को सुविधाजनक बनाने के लिये भारत को मौजूदा परिवहन और पारगमन गलियारे का उपयोग करने में सक्षम बनाना।
- मध्य एशिया के लिये एक महत्त्वपूर्ण प्रवेश द्वार और सबसे छोटा भूमि मार्ग बनाने के लिये चाबहार का दायरा बढ़ाना।
- मध्य एशिया के उच्च मूल्य वाले खनिजों तक पहुँच
- मध्य एशिया के साथ भारत के व्यापार में वृद्धि, जो वर्तमान में $1 बिलियन से अधिक है– मध्य एशिया के व्यापार का केवल 0.11% है।
- अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर (INSTC) के साथ मौजूदा व्यापार गलियारों को सिंक्रोनाइज करना।

अश्गाबात समझौता मध्य एशिया के लिये भारत के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है, जिससे वैश्विक शक्ति राजनीति को व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा और रणनीतिक संतुलन की पहुँच मिलती है। अश्गाबात समझौता और अंतर्राष्ट्रीय उत्तरी-दक्षिणी परिवहन का गठजोड़ चीन की 'वन बेल्ट वन रोड' का एक हद तक सामना करके चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित कर सकता है।

2017

प्रश्न: दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों की अर्थव्यवस्था एवं समाज में भारतीय प्रवासियों को एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इस संदर्भ में दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय प्रवासियों की भूमिका का मूल्य निरूपण कीजिये। (250 शब्द, 15 अंक)

Indian Diaspora has an important role to play in South-East Asian countries' economy and society. Appraise the role of Indian Diaspora in South-East Asia in this context.

उत्तर: प्रवासी भारतीय वे लोग हैं, जो भारत छोड़कर विश्व के दूसरे देशों में जा बसे हैं। जहाँ-जहाँ प्रवासी भारतीय बसे हैं, वे वहाँ की आर्थिक, राजनीतिक दशा व दिशा को तय करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। प्रवासी भारतीयों को अपनी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखने के कारण ही वहाँ साझा पहचान मिली है और यही विशेषता उन्हें भारत में भी जोड़े रखती है। औपनिवेशिक व्यवस्था के परिणामस्वरूप 19वीं और 20वीं शताब्दी में बड़े पैमाने पर भारतीय प्रवासन शुरू हुआ।

दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में भारतीयों द्वारा आर्थिक योगदान

- ब्रुनेई में, मिनी मार्ट और छोटे रेस्तराँ चलाने के अलावा, भारतीयों ने मानव संसाधन रिक्तता को भर दिया है।
- फिलीपींस और इंडोनेशिया में, भारतीय समुदाय के सदस्यों ने कपड़ा उत्पादों के निर्यात में एक प्रमुख भूमिका निभाई है, जिसने हाल के दिनों में उनकी अर्थव्यवस्था को शक्ति प्रदान की है।
- मलेशिया और म्याँमार में, जीवन के लगभग सभी महत्त्वपूर्ण क्षेत्र, जैसे- सिविल सेवा, शिक्षा, पेशेवर-सेवाएँ, व्यापार और वाणिज्य बड़े पैमाने पर भारतीय समुदाय के हाथों में हैं।
- सिंगापुर के आईटी उद्योग का एक हिस्सा आज भारतीय विशेषज्ञता से संचालित हो रहा है। जैव प्रौद्योगिकी और चिकित्सा सहित वैज्ञानिक अनुसंधान में भी भारत का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

दक्षिण पूर्व एशियाई समाज में भारतीय प्रवासियों की भूमिका

- अधिकांश दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में भारतीय समुदाय ने स्थानीय आबादी के साथ खुद को बहुत अच्छी तरह से जोड़ा है।
- बसने वालों ने मूल निवासियों से विवाह किया है। व्यावहारिक रूप से हर देश में लगभग सभी भारतीय धार्मिक समुदायों के पूजा स्थलों की अच्छी उपस्थिति है, जो धार्मिक और सांस्कृतिक त्योहारों और कार्यक्रमों को बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं।
- पुरानी पीढ़ियाँ, विशेषरूप से मंदिरों, मस्जिदों और गुरुद्वारे में धार्मिक और भाषा की कक्षाएँ आयोजित करके भारतीय धार्मिक परंपराओं और भाषाओं को जीवित रखने का विशेष प्रयास करती हैं।
- सिंगापुर की कार्यकारी, विधायी और न्यायिक शाखाओं में बड़ी संख्या में भारतीय हैं।
- दक्षिण-पूर्व एशिया भी भारतीय फिल्मों और आयुर्वेद से काफी प्रभावित है।
- वर्तमान समय में पेशेवर प्रवासी भारतीय आईटी, शिक्षा और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में स्थानीय और बहुराष्ट्रीय कंपनियों में बड़े पदों पर कार्य कर रहे हैं।

निष्कर्षत: भारत का बढ़ता डायस्पोरा दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में एक स्मार्ट पावर के रूप में कार्य कर सकता है, जिसका इस्तेमाल भारत के साथ इन देशों के संबंधों को और बेहतर बनाने के लिये किया जा सकता है।

प्रश्न: "चीन अपने आर्थिक संबंधों एवं सकारात्मक व्यापार अधिशेष को एशिया में संभाव्य सैनिक शक्ति हैसियत को विकसित करने के लिये उपकरणों के रूप में इस्तेमाल कर रहा है।" इस कथन के प्रकाश में, उसके पड़ोसी के रूप में भारत पर इसके प्रभाव पर चर्चा कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

"China is using its economic relations and positive trade surplus as tools to develop potential military power status in Asia", In the light of this statement, discuss its impact on India as her neighbour.

उत्तर: दक्षिण एशिया में भारत चीन का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार एवं बाज़ार है। भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार लगभग 2022 में 135.984 बिलियन डॉलर का है, जो पूरी तरह चीन के पक्ष में झुका है। इस प्रकार चीन एशिया में अपने आर्थिक संबंधों एवं सकारात्मक व्यापार से हमेशा लाभ की स्थिति में बना हुआ है। इसमें कोई शक नहीं है कि वह इन लाभों को अपनी सैन्य शक्ति को विकसित तथा बेहतर करने में खर्च कर रहा है।

चीन के पड़ोसी होने का भारत पर प्रभाव

- चीन अरुणाचल प्रदेश के एक बड़े भाग को तिब्बत का क्षेत्र मानता है, जिसे लेकर दोनों देशों के मध्य लगातार विवाद की स्थिति बनी रहती है।
- भारत द्वारा दक्षिण चीन सागर में तेल और गैस खनन को चीनी नौसैनिकों द्वारा रोका जाना।
- वर्तमान समय में डोकलाम विवाद के संदर्भ में चीन ने भारत को अपनी सैन्य शक्ति दिखाने के साथ ही भारत पर दबाव भी डाला। हालाँकि, इससे भारत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, लेकिन दोनों देशों के मध्य कुछ दिनों तक तनाव ज़रूर पैदा हो गया था।
- चीन की स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स की नीति तथा बेल्ट एंड रोड परियोजना को भी भारत एक चुनौती के रूप में देखता है।

- चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे का कुछ हिस्सा पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से होकर गुज़रेगा, जो भारत के समक्ष अवश्य ही एक चुनौती होगा।
- एशियन इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक (AIIB) जैसा मज़बूत वित्तीय संस्थान चीन की परियोजना के लिये वित्त की व्यवस्था कर रहा है।
- चीन द्वारा ऋणजाल में छोटे-छोटे देशों को कर्ज़ में डुबोना और उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना मुख्य उद्देश्य है, ताकि भारत पर दबाव बनाया जा सके, उदाहरण- नेपाल, मालदीव, श्रीलंका को ऋण प्रदान करना।
- भारत को घेरने के लिये कई देशों में सैन्य अड्डे स्थापित करना, उदाहरण: ज़िबूती।

चीन द्वारा व्यापार अधिशेष को सैनिक शक्ति की हैसियत विकसित करने के लिये प्रयोग किया जा रहा है, भारत इस बात को भली-भाँति समझता है। चीन को प्रतिसंतुलित करने के लिये भारत द्वारा उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर-INSTC और स्पाइसरूट परियोजना को शुरू करने के साथ ही जापान के सहयोग से एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर परियोजना विकसित करने पर विचार किया जा रहा है।

प्रश्न: संयुक्त राष्ट्र आर्थिक व सामाजिक परिषद (इकोसॉक) के प्रमुख प्रकार्य क्या हैं? इसके साथ संलग्न विभिन्न प्रकार्यात्मक आयोगों को स्पष्ट कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

What are the main functions of the United Nations Economic and Social Council (ECOSOC)? Explain different functional commissions attached to it.

उत्तर: संयुक्त राष्ट्र आर्थिक व सामाजिक परिषद (इकोसॉक) लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिये विशेषरूप से समर्पित प्रमुख वैश्विक अंतर-सरकारी निकाय है। जून 1946 के ECOSOC संकल्प द्वारा इसे आर्थिक और सामाजिक परिषद के कार्यात्मक आयोग के रूप में स्थापित किया गया।

ECOSOC के प्रकार्य

- जीवन की उच्च गुणवत्ता के साथ-साथ रोज़गार तथा सामाजिक और आर्थिक स्थिति को बेहतर करना।
- अंतर्राष्ट्रीय, आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान की पहचान करना।
- अंतर्राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और शैक्षिक सहयोग करना।
- मानव अधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता के लिये सार्वभौमिक सम्मान को प्रोत्साहित करना।

परिषद के साथ संलग्न विभिन्न प्रकार्यात्मक आयोग

- नारकोटिक ड्रग्स पर आयोग
- विज्ञान और तकनीकी के विकास पर आयोग
- महिलाओं की स्थिति पर आयोग, उदाहरण: महिलाओं की उन्नति और सशक्तीकरण के लिये वर्तमान चुनौतियों को देखते हुए बेहतर स्थिति हेतु रणनीति बनाना।
- जनसंख्या और विकास पर आयोग, उदाहरण: जनसंख्या से संबंधित विकास नीतियाँ और कार्यक्रम बनाने के लिये राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर सुझाव देना। सम्मेलनों की सफलता और असफलता के कारणों की पहचान करना, उनके बारे में परिषद को सलाह देना, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों की कार्यवाही की निगरानी करना, समीक्षा और मूल्यांकन करना।
- अपराध पर रोकथाम और आपराधिक न्याय आयोग, उदाहरण: राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रणनीतियों को विकसित करने और अपराधों को नियंत्रित करने के लिये प्राथमिकताओं की पहचान करने हेतु राज्यों को विशेषता, अनुभव और जानकारी का आदान-प्रदान करने के लिये एक मंच प्रदान करना।

निष्कर्षत: ECOSOC के प्रकार्य एवं प्रकार्यात्मक आयोग के विवरण से स्पष्ट होता है कि यह समस्त विकास पर बहस एवं अभिनव सोच के लिये संयुक्त राष्ट्र का केंद्रीय मंच है।

प्रश्न: भारत की ऊर्जा सुरक्षा का प्रश्न भारत की आर्थिक प्रगति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भाग है। पश्चिम एशियाई देशों के साथ भारत के ऊर्जा नीति सहयोग का विश्लेषण कीजिये। (250 शब्द 15 अंक)

The question of India's Energy Security constitutes the most important part of India's economic progress. Analyze India's energy policy cooperation with West Asian Countries.

उत्तर: किसी भी देश की आर्थिक प्रगति में उसके विनिर्माण उद्योगों, कृषि तथा परिवहन के साधनों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, लेकिन इनका संचालन बिना ऊर्जा के संभव नहीं है। इस प्रकार देश की आर्थिक प्रगति उसके ऊर्जा संसाधनों पर निर्भर करती है। इस परिप्रेक्ष्य में यदि भारत की बात करें तो यह ऊर्जा उपयोग में विश्व का तीसरा देश है, लेकिन अपनी ऊर्जा ज़रूरतों के लिये मुख्यत: आयात पर निर्भर है। यह अपने ऊर्जा आयात का एक बड़ा भाग पश्चिम एशियाई देशों- ईरान, सऊदी अरब, इराक, संयुक्त अरब अमीरात, कतर आदि से प्राप्त करता है।

यह ऊर्जा आयात मुख्यत: कच्चे तेल तथा प्राकृतिक गैस के रूप में होता है। वर्तमान समय में भारत सरकार द्वारा लुकवेस्ट की यथार्थवादी नीति अपनाई गई है, जिसमें पश्चिम एशिया की प्रमुख क्षेत्रीय शक्तियों- ईरान, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, इराक, कतर, फिलिस्तीन और इज़राइल के साथ अच्छे संबंध विकसित करने का प्रयास किया गया है।

पश्चिम एशियाई देशों के साथ भारत के ऊर्जा नीति सहयोग के बिंदु

- हाल ही में संयुक्त अरब अमीरात (UAE) द्वारा भारत के साथ ऊर्जा सुरक्षा के लिये आपातकालीन तेल रिज़र्व संबंधी समझौता हुआ है, जो भारत की ऊर्जा नीति के लिये पश्चिम एशियाई देशों के साथ सहयोग में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।
- भारत सऊदी अरब को अपनी ऊर्जा सुरक्षा के लिये एक प्रमुख सहयोगी और निवेश, संयुक्त उद्यम, प्रौद्योगिकी परियोजनाओं के हस्तांतरण के लिये एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक भागीदार मानता है।

- भारत, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात के लिये तेल और अन्य पेट्रोलियम उत्पादों का प्रमुख बाज़ार है। तेल ही कीमतों में कमी और शेल गैस जैसे नए ऊर्जा संसाधनों की खोज से उत्पन्न स्थिति से निपटने के लिये भारत ने इन देशों को बाज़ार के रूप में एक विकल्प भी दिया है।
- भारत ईरान से तेल और गैस पाइपलाइन लाने पर विचार कर सकता है। भारत द्वारा विकसित किया जा रहा ईरान का चाबहार बंदरगाह भारत की ऊर्जा सुरक्षा में महत्त्वपूर्ण साबित हो सकता है।
- यू.ए.ई., बहरीन, कुवैत जैसे देश भारत में निवेश करने के भी इच्छुक हैं, जो पश्चिमी एशियाई देशों के साथ भारत के ऊर्जा नीति सहयोग को और मज़बूत करते हैं।
- कतर, खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) का सदस्य है। अत: कतर के साथ सहयोग खाड़ी क्षेत्रों में स्थिर संबंध बनाए रखने के लिये आवश्यक है, जो भारत की ऊर्जा नीति के लिये महत्त्वपूर्ण है।
- भारत के एल.एन.जी. आयात में लगभग 50% से ज़्यादा योगदान के साथ भारत के लिये इसका सबसे बड़ा आपूर्ति का देश है।

भारत की ऊर्जा नीति सहयोग के संदर्भ में समस्याएँ

- ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये दूसरे देश पर निर्भरता भविष्य में समस्याएँ पैदा कर सकती है, उदाहरण: भारत ईरान से कच्चा तेल आयात करता था। कुछ कारणों से भारत अब इस देश से आयात नहीं कर रहा है और यह निश्चित रूप से भारत की ऊर्जा सुरक्षा को तब तक प्रभावित करता है, जब तक कि कोई अन्य प्रतिस्थापन नहीं मिल जाता।
- आयात पर भारी भार आंतरिक तेल की कीमतों में वृद्धि के लिये ज़िम्मेदार है और एक देश को आत्मनिर्भर बनने से रोकता है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि ऊर्जा सुरक्षा के लिये एक सुरक्षित स्थान बनाने के लिये विविधीकरण नीति अपनाने की आवश्यकता है, जो अन्य तेल निर्यातक देशों को आकर्षित करे।

2016

प्रश्न: शीतयुद्धोत्तर अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य के संदर्भ में भारत की पूर्वोन्मुखी नीति के आर्थिक और सामरिक आयामों का मूल्यांकन कीजिये। (200 शब्द 12 अंक)

Evaluate the economic and strategic dimensions of India's Look East Policy in the context of the post Cold War international scenario.

उत्तर: सोवियत संघ के पतन और शीतयुद्ध की समाप्ति के साथ ही नए एकध्रुवीय विश्व का निर्माण हुआ। विश्व के इस नए स्वरूप पर पूंजीवादी व्यवस्था का स्पष्ट प्रभाव था। इस नवीन एकध्रुवीय विश्व में अपनी अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी के विस्तार व घरेलू और वैश्विक आर्थिक चुनौतियों के निवारण हेतु भारत ने अपने पूर्वी पड़ोसी देशों के साथ घनिष्ठ आर्थिक व सामरिक संबंध स्थापित करने की नवीन नीति पर बल दिया। इसे ही भारत की पूर्वोन्मुखी नीति 1991 के नाम से जाना जाता है।

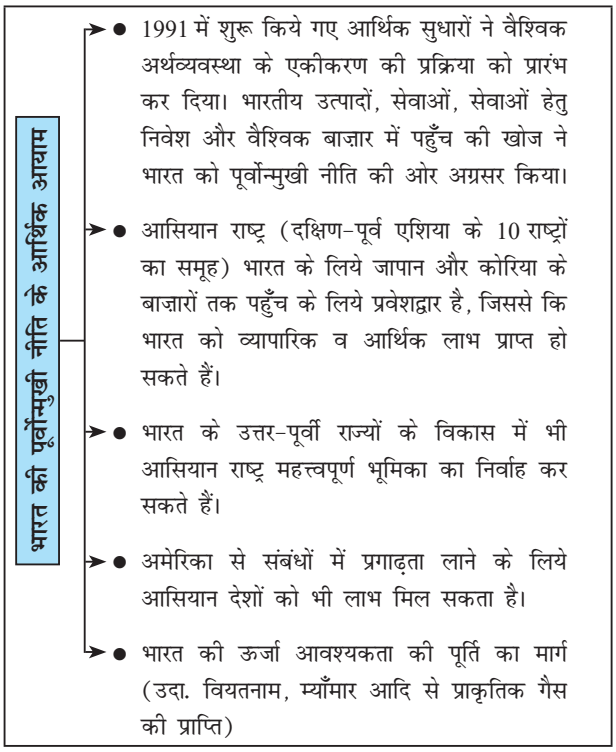

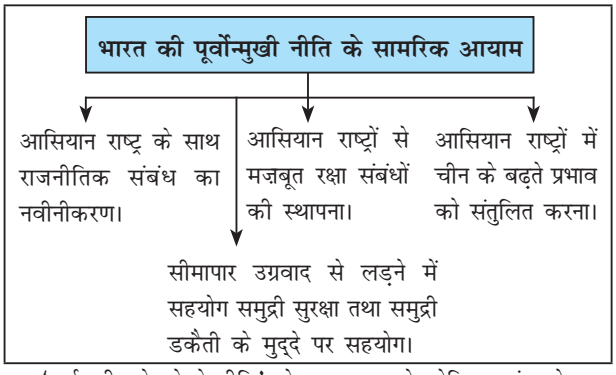

- 'पूर्व की ओर देखो नीति' के द्वारा भारत ने सोवियत संघ के पतन के पश्चात् अपनी अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को मज़बूत करने के साथ ही चीन के दक्षिण-पूर्व एशिया में बढ़ते प्रभाव से अपनी सुरक्षा व सामरिक चिंताओं के समाधान का भी प्रयत्न किया व बिम्सटेक और मेकांग-गंगा सहयोग आदि क्षेत्रीय संगठनों से चीन को दूर रख सफलता अर्जित की।
- आसियान राष्ट्रों की दक्षिण चीन सागर नीति का भारत द्वारा समर्थन व दक्षिण चीन सागर के आर्थिक संसाधनों के दोहन व सुरक्षा हेतु आसियान राष्ट्रों का भारत पर विश्वास, भारत की पूर्वान्मुख नीति की सफलता कही जा सकती है।
- दक्षिण-पूर्व एशिया के बढ़ते हुए आर्थिक व भू-सामरिक महत्त्व को देखते हुए भारत ने इस नीति में सांस्कृतिक व धार्मिक आयामों का समन्वय कर इस नीति को गतिशीलता प्रदान करने हेतु 'एक्ट ईस्ट नीति' के रूप में संदर्भित किया है।

21वीं सदी में भारत एक बड़ी आर्थिक व सैन्य शक्ति के रूप में स्थित है और पिछले दो दशकों में विकसित हमारी पूर्व की ओर देखो नीति ने सफलता अर्जित की है। आज इस क्षेत्र में भारत को ठोस एवं विश्वसनीय साथी के रूप में देखा जाता है। हमारे विदेशी व्यापार का रुख पूर्व की ओर जाता है तथा हम दृढ़ता से इस क्षेत्र में अपने एवं बहुपक्षीय संबंधों में आर्थिक एवं सामरिक आयामों को शामिल कर रहे हैं।

प्रश्न: "भारत में बढ़ते हुए सीमापारीय आतंकी हमले और उसके सदस्य राज्यों के आंतरिक मामलों में पाकिस्तान द्वारा बढ़ता हस्तक्षेप सार्क (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन) के भविष्य के लिये सहायक नहीं है।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिये। (200 शब्द 12.5 अंक)

"Increasing cross-border terrorist attacks in India and growing interference in the internal affairs of several member-states by Pakistan are not conducive for the future of SAARC (South Asian Association for Regional Cooperation)." Explain with suitable examples.

उत्तर: भारतीय उपमहाद्वीप में शांति, स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय, संवृद्धि व अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर सहयोग आदि के उद्देश्य से 1985 में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय संगठन (सार्क) की स्थापना ढाका में की गई थी। इस क्षेत्रीय संगठन में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मालदीव, भूटान, श्रीलंका आदि इसके संस्थापक सदस्य हैं, जबकि अफगानिस्तान को वर्ष 2007 में इसमें सम्मिलित किया गया। इसका मुख्यालय काठमांडू में है।

पाकिस्तान की आतंकवाद समर्थित नीति व सदस्य राष्ट्रों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप, क्रमशः सार्क आतंकवाद उन्मूलन क्षेत्रीय समझौता 1987 व सार्क चार्टर में उल्लेखित उद्देश्यों का स्पष्ट उल्लंघन के उदाहरण

- भारत के उरी व पठानकोट में पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा हमला व कश्मीर में अलगाववादियों की हिंसक कार्यवाहियों को समर्थन।
- अफगानिस्तान में तालिबान को समर्थन व अच्छे एवं बुरे आतंकवाद की पाकिस्तान की दोहरी नीति।
- बांग्लादेश की राजधानी ढाका में जुलाई 2016 को हुआ आतंकी हमला व 1971 के बांग्लादेश के मुक्तिसंघर्ष के युद्ध अपराधियों, विशेषकर कट्टरवादी समूह जमात-ए-इस्लामी के नेताओं की सज़ा का विरोध, जो कि सीधे बांग्लादेश के आंतरिक मामलों व न्यायिक प्रक्रिया में हस्तक्षेप है।

सार्क के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगने के कारण

- अफगानिस्तान, बांग्लादेश ने इस्लामाबाद में आयोजित होने वाले 19वें सार्क सम्मेलन के बहिष्कार का निर्णय लिया और अंततः इस सम्मेलन का रद्द होना।
- आतंकवाद और आंतरिक समस्याओं में हस्तक्षेप के अतिरिक्त पाकिस्तान द्वारा लगातार सार्क के मूल उद्देश्यों, जैसे- क्षेत्र में एकीकरण, बेहतर संपर्क, आपसी व्यापार में वृद्धि आदि की प्राप्ति में भी व्यवधान उत्पन्न किये जा रहे हैं।
- क्षेत्र के विकास के लिये किये जा रहे प्रयासों, विशेषकर 18वें सार्क सम्मेलन, नेपाल में प्रस्तावित सार्क देशों के बीच मोटर वाहन समझौता, ट्रेन सेवा, सार्क सैटेलाइट आदि को बाधित कर संगठन को लगवाग्रस्त बनाने की कोशिश की जा रही है।
- सार्क का गठन, क्षेत्रीय, राजनीतिक एवं आर्थिक सहयोग के लिये किया गया था। भारत ने भी क्षेत्रीय विकास को भारत-पाकिस्तान मतभेदों पर वरीयता प्रदान करते हुए लगातार इस मंच पर सहयोग किया व दक्षिण एशिया के विकास में अपना सकारात्मक योगदान दिया। लेकिन पाकिस्तान की नीति सदस्य राष्ट्रों के लिये आंतरिक सुरक्षा व अस्थिरता के साथ ही सार्क के विकास कार्यों को भी बाधित करने की है।
- पाकिस्तान की कुटिलतापूर्ण मानसिकता के कारण उसे सार्क के भीतर ही अलग-थलग करने की नीति या पाकिस्तान की सार्क सदस्यता रद्द करने पर भी सदस्य राष्ट्रों में विचार हो रहा है, जिससे कि सार्क के भविष्य पर भी प्रश्नचिह्न लग रहे हैं।
- पाकिस्तान सार्क का दूसरा सबसे बड़ा व महत्त्वपूर्ण राष्ट्र है, जिसके सकारात्मक सहयोग के बिना दक्षिण एशिया में शांति स्थापित नहीं की जा सकती है एवं दक्षिण एशिया के विकास के लिये भी पाकिस्तान को सम्मिलित रखते हुए सार्क को अपनी निर्णय प्रक्रिया में बदलाव लाना चाहिये, जहाँ निर्णय आपसी सहमति से नहीं, बल्कि बहुमत के आधार पर हों।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिये सार्क का जीवित रहना आवश्यक है, क्योंकि सार्क की क्षतिपूर्ति बिम्सटेक व अन्य संगठनों द्वारा करना बहुत मुश्किल है। भारत को संपूर्ण दक्षिण एशिया के विकास के लिये सार्क का विकास और विस्तार करना होगा, जिसके लिये आसियान व यूरोपियन यूनियन उपयुक्त उदाहरण हो सकते हैं।

प्रश्न: यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन) के मैक्ब्राइड आयोग के लक्ष्य और उद्देश्य क्या-क्या हैं? इनमें भारत की क्या स्थिति है? (200 शब्द, 12.5 अंक)

What are the aims and objectives of the McBride Commission of the UNESCO? What is India's position on these?

उत्तर: बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध औपनिवेशिक शासन से मुक्ति व राजनीतिक और आर्थिक स्तर पर नई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के निर्माण का दौर रहा है। इस दौरान वैश्विक संचार व्यवस्था पर विकसित देशों के नियंत्रण ने सूचना असंतुलन की समस्या को जन्म दिया, जिससे विकासशील राष्ट्रों की स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, स्वशासन और विकास में बाधा उत्पन्न हुई व तीसरी दुनिया के देशों में छद्म उपनिवेशवाद, अस्थिरता और सांस्कृतिक प्रदूषण का भय उत्पन्न हुआ।

मैक्ब्राइड आयोग की संरचना एवं उद्देश्य

- इस संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय संचार व्यवस्था पर आधारित विचार-विमर्श का प्रमुख केंद्र होने के कारण यूनेस्को ने 1911 में आयरलैंड के पूर्व विदेशी मंत्री सीयेन मैक्ब्राइड की अध्यक्षता में एक 15 सदस्यीय अंतर्राष्ट्रीय आयोग का गठन किया।
- इसमें संचार विशेषज्ञ, शिक्षाविद्, पत्रकारिता एवं प्रसारण विशेषज्ञों को शामिल किया गया। पत्रकार बी.जी. वर्गीज ने इस आयोग में भारत का प्रतिनिधित्व किया।
- मैक्ब्राइड आयोग का उद्देश्य नई वैश्विक अर्थव्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में विकासशील देशों की आवश्यकता को केंद्र में रखकर सूचना के मुक्त एवं संतुलित प्रवाह की समस्या का अध्ययन कर उपयुक्त सुझाव प्रदान करना था।

मैक्ब्राइड आयोग के लक्ष्य

- वर्तमान संचार व्यवस्था में व्याप्त असंतुलन को समाप्त करना।
- विचारों एवं सूचनाओं के स्वतंत्र प्रवाह एवं विस्तारीकरण के मार्ग में आने वाली आंतरिक एवं बाह्य बाधाओं को दूर करना।
- विश्व विशेषत: विकासशील राष्ट्रों में सूचना के साधनों एवं माध्यमों की संख्या में बढ़ोतरी करना और संचार की व्यवस्था करना।
- एकाधिकार, सार्वजनिक, निजी और अति केंद्रीकृत व्यवस्था के नकारात्मक प्रभाव को समाप्त कर सूचना एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना।

भारत की स्थिति

- अंतर्राष्ट्रीय संचार के क्षेत्र में नई विश्व सूचना एवं संचार व्यवस्था (न्यूको) की स्थापना और विकास में भारत की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।
- न्यूको का लक्ष्य अंतर्राष्ट्रीय संचार में सामंजस्य स्थापित करने के लिये सूचना के संतुलित प्रवाह की व्यवस्था करना है।
- इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये 1978 में आयोजित यूनेस्को के 20वें सम्मेलन में भारत के प्रतिनिधि मंडल ने पूर्व-पश्चिम देशों के मध्य तनाव को कम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- भारत के नेतृत्व में गुटनिरपेक्ष समाचार समिति पूल का भी गठन किया गया। इसके अलावा भारत सरकार द्वारा विकासशील देशों के प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण के उद्देश्य से नई दिल्ली स्थित भारतीय जनसंचार संस्थान में कई प्रकार के कार्यक्रम भी संचालित किये जाते हैं।

1980 में प्रकाशित 'दुनिया एक विचार अनेक' नामक अपनी रिपोर्ट में मैक्ब्राइड आयोग ने पश्चिमी देशों के संचार माध्यमों पर साम्राज्यवाद एवं एकाधिकारवादी प्रभुत्व पर चिंता व्यक्त की। मैक्ब्राइड आयोग ने सुझाव दिया- "संचार माध्यमों का प्रयोग विश्व के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के औज़ार के रूप में किया जाना चाहिये।" इसकी संस्तुति से खफा होकर अमेरिका और ब्रिटेन ने यूनेस्को की सदस्यता तक त्याग दी थी और तर्क दिया कि संचार माध्यमों को अपने उद्देश्य और मापदंडों का स्वयं निर्धारण करना चाहिये, न कि अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का।

2015

प्रश्न: संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट की खोज में भारत के समक्ष आने वाली बाधाओं पर चर्चा कीजिये।

(200 शब्द, 12.5 अंक)

Discuss the impediments India is facing in its pursuit of a permanent seat in UN Security Council.

उत्तर: संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) की स्थापना वर्ष 1945 में संयुक्त राष्ट्र चार्टर द्वारा की गई थी। सुरक्षा परिषद संयुक्त राष्ट्र का महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसका उत्तरदायित्व है- अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना। 15 सदस्यीय परिषद के 5 स्थायी सदस्य- अमेरिका, रूस, चीन, ब्रिटेन और फ्राँस हैं, जबकि 10 गैर-स्थायी सदस्य 2 वर्ष की अवधि के लिये चुने जाते हैं।

- **UNSC से संबंधित मुद्दे**
  - वीटो पावर का दुरुपयोग
  - संयुक्त राष्ट्र में सुधार हेतु G-4 समूह का गठन
  - 'कॉफी क्लब' का गठन कर संयुक्त राष्ट्र में सुधार का विरोध।
  - राज्य की संप्रभुता पर खतरा।
  - P-5 के भीतर भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता ताइवान मुद्दा, रूस-यूक्रेन मुद्दे।
  - पर्याप्त प्रतिनिधित्व का अभाव (अफ्रीकी महाद्वीप से कोई स्थायी सदस्य नहीं)।

भारत ने UNSC में सात बार गैर-स्थायी सदस्य के रूप में कार्य किया है और जनवरी 2021 में 8वीं बार पुन: अस्थायी सदस्य के रूप में चुना गया है।

भारत की स्थायी सदस्यता के समक्ष बाधाएँ

- भारत की सदस्यता के लिये चार्टर में संशोधन करना पड़ेगा। इसके लिये स्थायी सदस्यों के साथ-साथ दो-तिहाई देशों द्वारा पुष्टि करना आवश्यक है।
- चीन भारत की सदस्यता का विरोध करता है।
- यद्यपि अमेरिका भारत की सदस्यता का समर्थन करता है, लेकिन वीटो पावर सहित सदस्यता के पक्ष में नहीं है।
- भारत का परमाणु अप्रसार संधि का हस्ताक्षरकर्त्ता राष्ट्र न होना भी भारत की स्थायी सदस्यता में बाधक है।
- चीन व पाकिस्तान से क्षेत्रीय सीमा विवादों ने भारत की अंतर्राष्ट्रीय व क्षेत्रीय स्वीकार्यता को बाधित किया है।
- कश्मीर समस्या व मानवाधिकार हनन के मुद्दों ने अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की छवि को धूमिल किया है।
- भारत की आर्थिक-सामाजिक स्थिति ज़्यादा सुदृढ़ नहीं। विभिन्न वैश्विक सूचकांकों में भारत का स्थान काफी पीछे है।
- 'कॉफी क्लब' के सदस्यों का विरोध व स्थायी सदस्यता के लिये अन्य दावेदारों का होना।

भारत दीर्घकाल से सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिये प्रयासरत् है अत: इसके लिये भारत को वैश्विक सुमदाय में अपनी छवि और सुदृढ़ करनी होगी। देश का सामाजिक-आर्थिक विकास करना होगा। साथ ही समय-समय पर अपने दावे को भी प्रस्तुत करते रहना होगा।

प्रश्न: अफ्रीका में भारत की बढ़ती हुई रुचि के सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष हैं। समालोचनात्मक परीक्षण कीजिये।

(200 शब्द, 12.5 अंक)

Increasing interest of India in Africa has its pros and cons. Critically examine.

उत्तर: भारत और अफ्रीका महाद्वीप के संबंध अति प्राचीन भौगोलिक एवं ऐतिहासिक जुड़ाव व शांति, प्रगति और समृद्धि के अपने साझा लक्ष्यों के साथ वर्तमान में भी जारी है। यह जुड़ाव साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, नस्ली भेदभाव और रंगभेद के खिलाफ साझा संघर्ष की कठिन परिस्थितियों से विकसित हुआ है व साझा संघर्ष से उपजी एकता आज भी न केवल बरकरार है, बल्कि गांधी और मंडेला के विचारों से प्रेषित होकर उत्तरोत्तर मजबूरी की ओर अग्रसर है।

वर्तमान समय में भारत और अफ्रीका महाद्वीप, दोनों ही अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, निर्धनता, बीमारी, अशिक्षा, भुखमरी व जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों से ग्रस्त हैं तथा दोनों का लक्ष्य अपने नागरिकों का समग्र विकास कर वैश्विक स्तर पर अपनी उचित भागीदारी का निर्वाह करना है।

भारत-अफ्रीका संबंधों के सकारात्मक पक्ष

- अफ्रीका के प्राकृतिक संसाधनों के बल पर भारत अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ ही वैश्विक आर्थिक शक्ति भी बन सकता है।
- अफ्रीका से तेल आयात कर भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकता हेतु पश्चिम एशिया पर निर्भरता कम कर सकता है।
- भविष्य में भारत अफ्रीका से परमाणु ऊर्जा हेतु यूरेनियम भी प्राप्त कर सकता है।
- संयुक्त राष्ट्र, विशेषत: सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के साथ अन्य वैश्विक मंचों पर भी दोनों व्यापक सहयोग कर सकते हैं।
- हिंद महासागर का भारत और अफ्रीका महाद्वीप के लिये समान, सामरिक, रणनीतिक व सुरक्षात्मक महत्त्व।
- भारत द्वारा अफ्रीकी देशों के विकास हेतु पूंजी, विशेषज्ञता और तकनीक के क्षेत्र में सहयोग।
- भारत द्वारा अफ्रीका को कृषि क्षेत्र में सहयोग देकर विश्व स्तर पर खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।
- संयुक्त राष्ट्र में अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के मुद्दे पर सहयोग।

भारत-अफ्रीका संबंधों के नकारात्मक पक्ष

- अफ्रीकी देशों में राजनीतिक अस्थिरता व लोकतंत्र की परिपक्वता का अभाव भारत और अफ्रीकी देशों के द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित करता है।
- कई अफ्रीकी देशों में गृहयुद्ध व हिंसा के दौरान मानवाधिकार उल्लंघन के मामले से भारत व अफ्रीकी देशों के संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- बोको हरम, अल शबाव, अल कायदा, आईएसआईएस जैसे आतंकवादी संगठनों की अफ्रीका में उपस्थिति तथा सोमालिया तट के पास समुद्री लुटेरों द्वारा भारतीय जहाज़ों का अपहरण चिंताजनक पहलू है।
- भारत में अफ्रीकी छात्रों व नागरिकों से भेदभाव की छोटी घटनाएँ भी बृहद् स्तर पर वैदेशिक संबंधों को प्रभावित कर रही है।
- उदारतापूर्ण वीज़ा नियमों का नशे के तस्करों द्वारा दुरुपयोग की संभावना।
- अफ्रीका में चीनी प्रभाव के कारण चुनौती।

कोविड महामारी के दौरान भारत द्वारा अफ्रीका को वैक्सीन प्रदान करना, ऑपरेशन वनीला, भारत-अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन, भारत-अफ्रीका रक्षा संवाद आदि के माध्यम से दोनों देश अपने द्विपक्षीय संबंधों को मज़बूत बनाने का प्रयास कर रहे हैं। वर्तमान में भारत के मात्र 29 अफ्रीकी राष्ट्रों से राजनयिक संबंध है। अत: इस क्षेत्र में विस्तार की त्वरित आवश्यकता है।

प्रश्न: परियोजना 'मौसम' को भारत सरकार की अपने पड़ोसियों के साथ संबंधों को सुदृढ़ करने की एक अद्वितीय विदेश नीति पहल माना जाता है। क्या इस परियोजना का एक रणनीतिक आयाम है? चर्चा कीजिये। (200 शब्द, 12.5 अंक)

Project 'Mausam' is considered a unique foreign policy initiative of the Indian Government to improve relationship with its neighbours. Does the project have a strategic dimensions? Discuss.

उत्तर: 'मौसम' परियोजना यूनेस्को की विश्व धरोहर समिति के 38वें सत्र में कतर की राजधानी दोहा में प्रस्तुत की गई। यह संस्कृति मंत्रालय की परियोजना है, जिसे सहयोगी निकायों के रूप में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण और राष्ट्रीय संग्रहालय की सहायता से नोडल समन्वय एजेंसी के रूप में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के द्वारा कार्यान्वित किया जाता है। इस परियोजना में 39 राष्ट्रों को शामिल किया गया है।

उद्देश्य

इस परियोजना का उद्देश्य हिंद महासागर क्षेत्र में विस्तृत 'समुद्र-तटीय' सांस्कृतिक भूदृश्य (Maritime Cultural Landscape) को यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में पार राष्ट्रीय संपत्ति (Trans-National Property) के रूप में चिह्नित करना है।

- MAUSAM Maritime Routes and Cultural Landscape across the Indian Ocean
- मौसम परियोजना का प्रयास दो स्तरों पर स्वयं को स्थापित करना है।
  - बृहद् स्तर पर इस परियोजना का उद्देश्य हिंद महासागर के देशों के बीच संचार को फिर से जोड़ना और स्थापित करना है, जो सांस्कृतिक मूल्यों और विचारों को समझने में मदद करेंगे।

- सूक्ष्म स्तर पर इसका उद्देश्य राष्ट्रीय संस्कृतियों को उनके क्षेत्रीय समुद्री परिवेश में समझना है।

अनौपचारिक रूप से इस परियोजना को हिंद महासागर क्षेत्र में चीन के विस्तृत होते प्रभाव को सीमित करने और चीन की रेशम मार्ग परियोजना के प्रति भारतीय प्रतिक्रिया माना जा रहा है। हिंद महासागर क्षेत्र भारत के लिये आर्थिक, सामरिक और सुरक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। पिछले कुछ वर्षों से इस क्षेत्र में चीन के प्रभाव में वृद्धि हुई है और पारंपरिक रूप से भारत के सहयोगी राष्ट्रों, जैसे- श्रीलंका, मालदीव आदि में भारत विरोधी तत्त्व प्रबल हुए हैं, जिससे इस क्षेत्र में भारत के प्रभाव में कमी आई है। इसलिये इस परियोजना द्वारा भारत इस क्षेत्र में अपने सांस्कृतिक, आर्थिक, सामरिक व रणनीतिक संबंधों को पुनः मज़बूत करना चाहता है।

इस परियोजना का विस्तार पूर्वी एशियाई देशों से लेकर पूर्वी अफ्रीकी देशों तक है। इसमें अरब प्रायद्वीप और भारतीय उपमहाद्वीप भी शामिल हैं। यदि भारत इस परियोजना के सफल क्रियान्वयन से हिंद महासागर क्षेत्र पर अपना नियंत्रण स्थापित कर पाता है तो भारत चीन को प्रति संतुलित करने के साथ ही एशियाई क्षेत्र में भी अपने प्रभुत्व को सरलता से स्थापित कर सकेगा।

प्रश्न: आतंकवादी गतिविधियों और परस्पर अविश्वास ने भारत-पाकिस्तान संबंधों को धूमिल बना दिया है। खेलों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान जैसी मृदु शक्ति किस सीमा तक दोनों देशों के बीच सद्भाव उत्पन्न करने में सहायक हो सकती है? उपर्युक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिये।

(200 शब्द, 12.5 अंक)

Terrorist activities and mutual distrust have clouded India-Pakistan relations. To what extent the use of soft power like sports and cultural exchanges could help generate goodwill between the two countries? Discuss with suitable examples.

उत्तर: भारत व पाकिस्तान के बीच स्वतंत्रता के पश्चात् से ही संबंध जटिलतापूर्ण रहे हैं। संबंधों की इस जटिलता को सुलझाने हेतु कूटनीतिक स्तर पर शिमला, ताशकंद, आगरा व लाहौर समझौते किये गए तो शांतिकाल में खेलों व सांस्कृतिक आदान-प्रदान की मृदु शक्ति का भी प्रयोग किया गया। हालाँकि, मृदु शक्ति से तब तक अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं किये जा सकते, जब तक कि इसका देश की विदेश नीति के साथ उचित सामंजस्य स्थापित न किया जाए।

- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान**
  - दोनों देशों के मध्य मनोरंजन के क्षेत्र में बॉलीवुड की फिल्में, टीवी धारावाहिक, गजलें, कव्वाली समानरूप से लोकप्रिय हैं।
  - पाकिस्तानी टीवी प्रोग्राम 'कोक स्टूडियो' में दोनों देशों के गायक प्रस्तुति देते हैं।
  - करतारपुर साहिब कॉरिडोर के निर्माण ने भारत-पाकिस्तान के कटु संबंधों में मधुरता लाने का काम किया है।
  - इसके अतिरिक्त कराची साहित्यिक समारोह में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद का प्रायोजक होना व दोनों देशों के दैनिक समाचार पत्रों की पहल 'अमन की आशा' महत्त्वपूर्ण भागीदारी निभा रहे हैं।
- **चुनौतियाँ**
  - दोनों राष्ट्रों की विदेश नीतियों से सामंजस्य स्थापित न कर पाना।
  - आतंकवादी घटनाओं पठानकोट एवं उरी सैन्य कैंप पर हमला, पुलवामा अटैक, संसद भवन पर हमला, 26/11 का हमला तथा कश्मीरी अलगाववादी विचारधारा ने भी भारत-पाकिस्तान संबंधों को बाधित किया है।
  - पाकिस्तानी सेना का अस्तित्व और पाकिस्तानी सत्ता प्रतिष्ठान एवं समाज पर वर्चस्व केवल भारत विरोध पर ही आधारित है, जो दोनों देशों के संबंधों को तनावपूर्ण बनाता है।
  - दोनों राष्ट्रों का अति राष्ट्रवादी मीडिया व शिक्षा पाठ्यक्रमों में परस्पर विरोधी भावनाओं का समावेश सांस्कृतिक आदान-प्रदान द्वारा संबंधों को मधुर बनाने के प्रयास को बाधा पहुँचाता है।
- **खेल:** भारत-पाकिस्तान के मध्य संबंधों को सुधारने हेतु विशेषतः क्रिकेट डिप्लोमेसी का प्रयोग किया जाता है।

इतनी विषमताओं के बावजूद दोनों राष्ट्रों ने विश्वास बहाली प्रक्रियाओं को चालू रखा है। भारत-पाकिस्तान के बीच दिल्ली-लाहौर बस सेवा, थार एक्सप्रेस द्वारा सेवा तथा वायु सेवा भी जारी है। दोनों राष्ट्रों के बीच धार्मिक यात्राएँ लगभग अनवरत् रूप से जारी हैं। अतः स्पष्ट है कि दोनों देश अपने संबंधों की कटुता को दूर करने की दिशा में निरंतर प्रयासरत् हैं।

2014

प्रश्न: अंतर्राष्ट्रीय निधीयन संस्थाओं में से कुछ की आर्थिक भागीदारी के लिये विशेष शर्तें होती हैं कि उपकर के स्रोत के लिये इस्तेमाल किया जाने वाला सहायता का एक बड़ा भाग, अग्रणी देशों से उपकर स्रोत के लिये इस्तेमाल किया जाएगा। ऐसी शर्तों के गुणों-अवगुणों पर चर्चा कीजिये और क्या भारतीय संदर्भ में ऐसी शर्तों को स्वीकार न करने की एक मज़बूत स्थिति विद्यमान है? (200 शब्द, 12½ अंक)

Some of the International funding agencies have special terms for economic participation stipulating a substantial component of the aid to be used for sourcing equipment from the leading countries. Discuss on merits of such terms and if there exists a strong case not to accept such conditions in the Indian context.

उत्तर: भारत के विकास में पूंजी एवं तकनीकी उपलब्धता की कमी बड़ी बाधाओं में से एक रही है। वर्तमान में इन बाधाओं के त्वरित समाधान का एक सरल रास्ता यह रहा है कि अंतर्राष्ट्रीय निधीयन संस्थाओं से पर्याप्त ऋण प्राप्त कर लिया जाए और इस ऋण का उपयोग परियोजना के निर्माण एवं तकनीकी उपलब्धता को सुनिश्चित करने के लिये किया जाए। सामान्यतः ये ऋण सस्ती दरों पर दीर्घकालिक रूप से प्रदान किये जाते हैं। बुलेट ट्रेन के निर्माण के लिये लगभग 20% कलपुर्जों का आयात जापान से करना होगा।

उदाहरणस्वरूप

- मुंबई अहमदाबाद हाई स्पीड रेल परियोजना में निवेश के लिये जापान की कंपनी जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन कंपनी (JICA) से 88,000 करोड़ रुपए का ऋण लेगी। 15 साल की अनुग्रह अवधि के साथ इस ऋण को भारत सरकार द्वारा 50 वर्षों में चुकता किया जाएगा।
- दिल्ली मेट्रो के चौथे चरण के विस्तार के लिये जापानी कंपनी (JICA) ने 8390 करोड़ रुपए का सरकार को ऋण प्रदान किया।

अंतर्राष्ट्रीय निधीयन संस्थाओं से ऋण प्राप्त करने के लाभ

- आवश्यकतानुसार परियोजना के निर्माण के लिये वित्त की उपलब्धता सुनिश्चित होती है।
- दीर्घकालिक ऋण एवं ब्याज की निम्न दरों से अर्थव्यवस्था पर बोझ कम पड़ता है।
- अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा मिलता है तथा आपसी द्विपक्षीय सहयोग सुदृढ़ होता है।
- उच्च तकनीकी उपलब्धता सुनिश्चित होने से परियोजना गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूर्ण होती है और विश्वस्तरीय होती है।

अंतर्राष्ट्रीय निधीयन संस्थाओं से ऋण प्राप्त करने की हानि

- परियोजना के निर्माण के लिये अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर निर्भर होना, जिसके फलस्वरूप विभिन्न प्रकार के नीतिगत निर्णय लेते समय अन्य राष्ट्रों का दबाव होता है। इस संबंध में बुलेट ट्रेन परियोजना का उदाहरण लिया जा सकता है।
- अत्यधिक ऋण सरकार के वित्तीय दायित्व को बढ़ाता है, जिससे अर्थव्यवस्था पर बोझ बढ़ता है तथा राजकोषीय नीति को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।
- सहयोग की प्रक्रिया अंतर्राष्ट्रीय होने के कारण विभिन्न सरकारी प्रक्रियाओं के अधीन होती है, जो परियोजना के देरी से पूर्ण होने का कारण बनती है।
- कभी-कभी अंतर्राष्ट्रीय निधीयन संस्थाओं द्वारा परियोजना संबंधित कार्यों को पूरे होने से पूर्व ही छोड़ दिया जाता है, इससे सरकार पर अनावश्यक आर्थिक बोझ बढ़ जाता है।

निष्कर्षतः अंतर्राष्ट्रीय निधीयन संस्थाओं की भारत के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। इन संस्थाओं द्वारा लगाई गई शर्तों को स्वीकार न करने का मतलब यह होगा कि इनके सहयोग से वंचित होना, जो कि भारत के हितों के अनुकूल नहीं होगा वर्तमान वैश्वीकरण के दौर में निधीयन संस्थाओं का सहयोग एवं शर्तों को स्वीकार करना एक समझदारी भरा फैसला होगा, परंतु इसके लिये थोड़ी सावधानी अपेक्षित है, जिससे राष्ट्र की संप्रभुता पर कोई आँच न आए।

प्रश्न: सूचना प्रौद्योगिकी समझौतों (ITAs) का उद्देश्य हस्ताक्षरकर्त्ताओं द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी उत्पादों पर सभी करों और प्रशुल्कों को कम करके शून्य पर लाना है। ऐसे समझौतों का भारत के हितों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? (200 शब्द, 12.5 अंक)

The aim of Information Technology Agreements (ITAs) is to all taxes and tariffs on information technology products by signatories to zero. What impact would such agreements have on India's interests?

उत्तर: वर्तमान समय में वैश्वीकरण की प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी का विकास एक महत्त्वपूर्ण कारक रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी ने देशों की अर्थव्यवस्थाओं, लोगों एवं उनके व्यवहारों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। वैश्विक विकास में सूचना प्रौद्योगिकी के उत्पादों के व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिये विश्व व्यापार संगठन द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी समझौता लागू किया गया।

समझौतों के उद्देश्य

- सूचना प्रौद्योगिकी के उत्पादों के व्यापार के लिये अधिकतम स्वतंत्रता प्रदान करना।
- वैश्विक स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित उद्योग एवं तकनीकी विकास को प्रोत्साहित करना।
- सूचना प्रौद्योगिकी के सकारात्मक वैश्विक आर्थिक विकास और कल्याण को बढ़ावा देना।

सूचना प्रौद्योगिकी के मुख्य समझौते

- **सूचना प्रौद्योगिकी समझौता-I**
  - यह विश्व व्यापार संगठन द्वारा लागू किया गया एक बहुपक्षीय समझौता है और 1996 में सिंगापुर में सूचना प्रौद्योगिकी उत्पादों के व्यापार पर मंत्रिस्तरीय घोषणा में 29 प्रतिभागियों द्वारा संपन्न हुआ।
  - 1 जुलाई, 1997 को लागू हुआ।
  - यह गंभीर रूप से महत्त्वपूर्ण आईसीटी उद्योग के लिये व्यापार बाधाओं को कम करने में तेज़ी लाने और गहरा करने का प्रयास करता है।
  - वर्तमान में IT उत्पादों में विश्व व्यापार के लगभग 97% का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रतिभागियों की संख्या बढ़कर 82 हो गई है।
- **सूचना प्रौद्योगिकी समझौता-II**
  - IT के दायरे और कवरेज़ को व्यापक बनाने का प्रस्ताव दिया।
  - दिसंबर 2015 में नैरोबी मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में 50 से अधिक सदस्यों ने समझौते के विस्तार का निष्कर्ष निकाला।
  - भारत ने फिलहाल इसमें भाग नहीं लेने का फैसला किया है, क्योंकि 17A-I के साथ भारत का अनुभव निराशाजनक रहा है, जिसने भारत से IT उद्योग को लगभग मिटा दिया।
  - इस समझौते से वास्तविक लाभ चीन को हुआ।
- **ITAs समझौतों के भारत के हितों पर प्रभाव**
  - यदि भारत प्रौद्योगिकी समझौता-2 पर हस्ताक्षर करता है तो "मेक इन इंडिया" के उद्देश्यों के विपरीत हो जाता है।

- देश के विनिर्माण की अपेक्षा विदेशों से उनके आयात को सस्ता कर देता है।
- वर्तमान परिदृश्य में भारत सूचना प्रौद्योगिकी की वस्तुओं, जैसे- हार्डवेयर का निर्यातक की जगह आयातक है।

निष्कर्षतः सूचना प्रौद्योगिकी की प्रमुख शर्तों की विवेचना से प्रतीत होता है कि इस प्रकार के समझौते किसी भी देश को तभी लाभ पहुँचा सकते हैं, जब उसका सूचना प्रौद्योगिकी की वस्तुओं का विनिर्माण क्षेत्र मज़बूत हो तथा वह आयातक की जगह निर्यातक हो। जिस प्रकार से वर्तमान सरकार द्वारा घरेलू विनिर्माण इकाइयों को प्रोत्साहन देने के लिये 'मेक इन इंडिया' योजना संचालित की जा रही है, उससे होने वाले लाभ को देखते हुए भारत भविष्य में इन समझौतों पर हस्ताक्षर करने का मन बना सकता है।

प्रश्न: भारत ने हाल ही में 'नव विकास बैंक' (NDB) और साथ ही 'एशियाई आधारिक संरचना निवेश बैंक' (AIIB) का संस्थापक सदस्य बनने के लिये हस्ताक्षर किये हैं। इन दो बैंकों की भूमिकाएँ एक-दूसरे से किस प्रकार भिन्न होंगी? भारत के लिये इन दो बैंकों के रणनीतिक महत्त्व पर चर्चा कीजिये। (200 शब्द, 12.5 अंक)

India has recently signed to become founding member of New Development Bank (NDB) and also the Asian Infrastructure investment Bank (AIIB). How will the role of the two Banks be different? Discuss the strategic significance of these two Banks for India.

उत्तर: भारत ने हाल ही में 'नव विकास बैंक' तथा 'एशियाई आधारिक संरचना निवेश बैंक' का संस्थापक सदस्य बनने के लिये हस्ताक्षर किये हैं। जहाँ नव विकास बैंक की स्थापना की पहल का विचार 2012 के ब्रिक्स सम्मेलन (भारत) में भारत द्वारा लाया गया, वहीं 2014 के ब्रिक्स सम्मेलन (ब्राज़ील) में इसके समझौते पर हस्ताक्षर किये गए, जबकि एशियाई आधारिक संरचना निवेश बैंक की स्थापना का निर्णय चीन द्वारा लिया गया।

स्थापना की आवश्यकता क्यों पड़ी?

- इन दोनों बैंकों की स्थापना का निर्णय विश्व बैंक तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में विकसित देशों, विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका की मनमानी तथा एकाधिकार को देखते हुए किया गया।

दोनों बैंकों की भूमिका में अंतर

नव विकास बैंक (NDB)	एशियाई आधारिक संरचना निवेश बैंक
NDB में मुख्यतः ब्रिक्स देशों की भागीदारी सुनिश्चित की गई है, जिससे इसका स्वरूप क्षेत्रीय बैंक की तरह है।	एशियाई आधारिक संरचना निवेश बैंक में कोई भी देश भागीदार बन सकता है, जिससे इसका स्वरूप वैश्विक प्रकार का है।
NDB का पहला अध्यक्ष भारत से होगा।	AIIB का अध्यक्ष चीन से होगा।
सभी सदस्यों को समान मताधिकार प्राप्त है।	प्रत्येक देश को उसकी आर्थिक क्षमता के आधार पर मताधिकार प्रदान किया गया है।
अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली में पूरक का कार्य करेगा, अर्थात् भुगतान संतुलन की समस्या को दूर करेगा, साथ ही ढाँचागत एवं विकास परियोजनाओं को धन उपलब्ध कराएगा।	बुनियादी ढाँचे को ऋण प्रदान करेगा, अर्थात् ऊर्जा, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन इत्यादि पर ऋण उपलब्ध कराएगा।
NDB का मुख्य उद्देश्य ब्रिक्स देशों के मध्य आपसी संबंधों को बढ़ावा देना है।	AIIB का उद्देश्य वैश्विक वित्तीय संस्थाओं से प्रति संतुलन स्थापित करना है।

NDB और AIIB की स्थापना तथा इनमें भारत की भागीदारी के रणनीतिक महत्त्व

- भारत के आर्थिक सहयोग के लिये बेहतर विकल्प उपलब्ध होंगे तथा वह अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा विश्व बैंक से संतुलन साधने की स्थिति में होगा।
- AIIB अपने संचालन से विश्व बैंक तथा एशियाई विकास बैंक को कमज़ोर कर सकता है, जिससे भारत जैसे देश प्रभावित होंगे, क्योंकि भारत को अपनी योजनाओं के संचालन के लिये धन इन्हीं दो संस्थाओं से मिलता है। अतः भारत को एशियाई नवसंरचना निवेश बैंक की सदस्यता ज़रूरी है।
- एशियाई विकास बैंक तथा विश्व बैंक में विकसित देशों का दबदबा है। अतः भारत के लिये एक बेहतर विकल्प उपलब्ध होगा।
- भारत द्वारा इन बैंकों में भागीदारी से उसकी आर्थिक विकास दर में वृद्धि होगी तथा भारत-चीन के द्विपक्षीय संबंध बेहतर होंगे।

प्रश्न: विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू.टी.ओ.) एक महत्त्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्था है, जहाँ लिये गए निर्णय, देशों को गहराई से प्रभावित करते है। डब्ल्यू.टी.ओ. का क्या अधिदेश है (मैंडेट) और उसके निर्णय किस प्रकार बंधनकारी हैं? खाद्य सुरक्षा पर विचार-विमर्श के पिछले चक्र पर भारत के दृढ़-मत का समालोचना पूर्वक विश्लेषण कीजिये।

(200 शब्द, 12.5 अंक)

WTO is an important international institution where decisions taken affect countries in a profound manner. What is the mandate of WTO and how binding are their decisions? Critically analyse India's stand on the latest round of talks on Food Security.

उत्तर: विश्व व्यापार संगठन एक अंतर-सरकारी संगठन है। आधिकारिक रूप से इसकी स्थापना वर्ष 1995 में मराकेश समझौते पर हस्ताक्षर के फलस्वरूप हुई थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन देना तथा व्यापारिक नियमों से संबंधित जटिलताओं और समस्याओं का समाधान करना है। इस संस्था द्वारा लागू किये जाने वाले कानून सदस्य देशों की संसदों में पारित किये जाते हैं।

WTO ने अपने कार्यों के संचालन के कुछ अधिदेशों को निर्मित किया है

- **गैर विभेदात्मक:** यदि कोई देश अन्य देश में उत्पादित किसी भी वस्तु पर कोई लाभ, सुविधा अथवा समर्थन प्रदान करता है तो यह लाभ, सुविधा तथा समर्थन स्वत: और तुरंत इस वस्तु के उत्पादक अन्य सभी सदस्य देशों को भी बिना सशर्त प्राप्त हो जाएंगे।
- **परस्परता:** एक देश द्वारा दी गई छूट सुविधा दूसरें देश को भी समान रूप से मिलनी चाहिये, ताकि उनके भुगतानों में ज़्यादा अंतर नहीं हो सके। यह सुविधा उन विकासशील देशों को भी मिलनी चाहिये, जो भुगतान संतुलन के संकट का सामना कर रहे हैं।
- **पारदर्शिता:** इस सिद्धांत के अनुसार सभी सदस्य देशों में लागू, घरेलू व्यापार नीतियों में पारदर्शिता होनी चाहिये। सदस्य देशों की आपसी बातचीत से समयबद्ध तरीके से टैरिफ तथा नॉन टैरिफ बाधाओं को दूर करना।

विश्व व्यापार संगठन के निर्णय सभी सदस्य देशों पर कानूनी रूप से बाध्यकारी होने हैं तथा इसके किसी नियमों और विनियमों के उल्लंघन पर इसकी विवाद निपटान समिति के समक्ष एक आधिकारिक शिकायत द्वारा विरोध दर्ज करा सकते हैं। भारत ने अपनी विशाल जनसंख्या को भुखमरी, कुपोषण से दूर रखने के लिये तथा लोगों के बेहतर स्वास्थ्य हेतु खाद्य सुरक्षा अधिनियम लागू किया है।

बाली में विकसित देशों द्वारा भारत पर लगााये गए आरोप

- सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खाद्यान्नों को बाज़ार से क्रय कर सस्ते मूल्यों पर उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराएगी परिणामत: सब्सिडी के कारण खाद्यान्नों की कीमतें सरकारी सहायता के कारण बढ़ नहीं पाएंगी, वहीं इससे कृषकों को भी न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना से अनुचित लाभ प्राप्त होगा।
- इससे विश्व व्यापार संगठन के कृषि समझौते की दस प्रतिशत सब्सिडी सीमा का उल्लंघन होगी।

विकसित देशों के इस विरोध में भारत के तर्क

- भारत की कुछ सामाजिक-आर्थिक ज़रूरतें हैं, इन ज़रूरतों को देखते हुए या तो कृषि सब्सिडी के नियमों में छूट दी जाए अथवा कृषि मूल्य का आकलन 1988 की कीमतों के आधार पर किया जाए।
- सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों के तहत भुखमरी और कुपोषण उन्मूलन के लक्ष्यों की प्राप्ति की दृष्टि से भी भारत के लिये खाद्य सुरक्षा अधिनियम आवश्यक है।

बाली सम्मेलन में गतिरोध (भारत के तर्क के कारण) के समाधान

- खाद्य सुरक्षा मुद्दे पर यह निर्णय लिया गया कि जब तक विश्व व्यापार संगठन की वार्ताओं द्वारा इसका हल नहीं निकल जाता, तब तक खाद्य सुरक्षा पर सब्सिडी मिलती रहेगी। इस व्यवस्था को शांति खंड की संज्ञा दी गई, इसकी समीक्षा 2017 में करने का निर्णय लिया गया।
- इसे कृषि समझौते का उल्लंघन नहीं माना जाएगा।

WTO में भारत के इस कठोर रुख के कारण विश्व स्तर पर भारत की छवि एक अनम्य सौदेबाज़ राष्ट्र की बनी है। इसने बहुपक्षीय समझौतों में भारत की भागीदारी को कमज़ोर किया है, लेकिन भारत के करोड़ों किसानों की आजीविका सुरक्षा व कुपोषण, भुखमरी की समाप्ति व एसडीजी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये यह आवश्यक था।

प्रश्न: दक्षिणी चीन सागर के मामले में समुद्री भूभागीय विवाद और बढ़ता हुआ तनाव समस्त क्षेत्र में नौपरिवहन को और ऊपरी उड़ान की स्वतत्रंता को सुनिश्चित करने के लिये समुद्री सुरक्षा की आवश्यकता की अभिपुष्टि करते हैं। इस संदर्भ में भारत एवं चीन के बीच द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा कीजिये।

(200 शब्द, 12.5 अंक)

With respect to the South China sea, maritime territorial disputes and rising tension affirm the need for safeguarding maritime security to ensure freedom of navigation and over flight throughout the region. In this context, discuss the bilateral issues between India and China.

उत्तर: दक्षिणी चीन सागर को दुनिया के सबसे व्यस्त जलमार्गों में से एक माना जाता है और यह व्यापार तथा परिवहन के लिये एक महत्त्वपूर्ण प्रवेश द्वार है। दक्षिणी चीन सागर से लगे हुए देशों- चीन, फिलिपींस, वियतनाम, ब्रुनेई, इंडोनेशिया, ताइवान इत्यादि सम्मिलित किये जाते हैं। इन क्षेत्रों के संसाधनों तथा द्वीपों पर वर्चस्व स्थापित करने हेतु निरंतर विवाद की स्थिति बनी रहती है।

चीन द्वारा दक्षिणी चीन सागर पर नियंत्राण करने के प्रयास के पीछे कारण

- इस विवाद का मुख्य कारण समुद्र पर विभिन्न क्षेत्रों का दावा और समुद्र का क्षेत्रीय सीमांकन है।
- चीन दक्षिण चीन सागर के 80% हिस्से को अपना मानता है। यह एक ऐसा समुद्री क्षेत्र है जहाँ प्राकृतिक तेल और गैसें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।
- एक रिपोर्ट के अनुसार इसकी परिधि में करीब 11 अरब बैरल प्राकृतिक गैस और तेल तथा मूंगे के विस्तृत भंडार मौजूद हैं।
- मछली व्यापार में शामिल देशों के लिये यह जल क्षेत्र महत्त्वपूर्ण तो है ही, साथ ही इसकी भौगोलिक स्थिति के कारण इसका सामरिक महत्त्व भी बढ़ जाता है।
- चीन दक्षिणी चीन सागर पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिये ऐतिहासिक रूप से 'नाइन डैश लाइन' का सहारा लेता है।

अमेरिका के बढ़ते हुए हस्तक्षेप को देखते हुए चीन ने दक्षिणी चीन सागर के कुछ भागों पर उड़ान निषिद्ध क्षेत्र (No flying Zone) घोषित कर दिया नया समुद्री जहाज़ों के परिचालन को प्रतिबंधित कर दिया।

दक्षिण चीन सागर में भारत के चीन के साथ द्विपक्षीय मुद्दे

- भारत का लगभग 55% व्यापार दक्षिणी चीन सागर द्वारा होता है। यदि चीन इस पर अधिकार कर लेता है तो इससे भारत का व्यापार नकारात्मक रूप से प्रभावित होगा।

- भारत के ओ.एन.जी.सी. विदेश लिमिटेड को वियतनाम द्वारा दक्षिणी चीन सागर में पेट्रोलियम खनन का पट्टा प्राप्त हुआ है। इस पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
- भारत की दक्षिणी-पूर्वी एशियाई देशों, अमेरिका के पश्चिमी तटीय क्षेत्रों, ऑस्ट्रेलिया एवं जापान के साथ हवाई तथा नौपरिवहन गतिविधियाँ इसी क्षेत्र से संचालित होती हैं, वे प्रभावित होंगी।
- दक्षिणी चीन सागर में समुद्री लुटेरे अत्यधिक सक्रिय हैं, जिसके चलते भारतीय नाविकों की सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य को देखते हुए दक्षिणी चीन सागर में चीन की आक्रमण सैन्य गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिये संयुक्त राष्ट्र और आसियान जैसे मंचों पर सामूहिक वैश्विक प्रयासों में वृद्धि की जानी चाहिये, चीनी मछुआरों द्वारा प्राकृतिक संपदा का अनियंत्रित दोहन और चीन सरकार द्वारा कृत्रिम द्वीपों के निर्माण आदि से समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को भारी क्षति हो रही है। अतः ऐसे मुद्दों को वैश्विक मंचों पर उठाया जाना चाहिये। क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करने के लिये भारत को (QUAD) जैसे बहुराष्ट्रीय समूहों के माध्यम से निरंतर संयुक्त नौ-सैनिक अभ्यासों का आयोजन करना चाहिये।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि इन प्रयासों के द्वारा चीन के बढ़ते प्रभुत्व को अवश्य कम किया जा सकता है।

2013

प्रश्नः हाल के कुछ वर्षों में भारत एवं जापान के मध्य आर्थिक संबंधों का विकास हुआ है पर अब भी वह उनकी संभाविता से बहुत कम है। उन नीतिगत दबावों को (व्यवरोधों) स्पष्ट कीजिये जिनके, कारण यह विकास अवरुद्ध है।

(200 शब्द, 12.5 अंक)

Economic ties between India and Japan while growing in the recent years are still far below their potential. Elucidate the policy constraints which are inhibiting this growth.

उत्तरः जापान सुदूर उत्तर-पूर्व में बसा भारत का एक महत्त्वपूर्ण सहयोगी देश है, जिससे भारत के संबंध हमेशा से बेहतर बने हुए हैं। भारत-जापान के मध्य सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक संबंध निरंतर गतिशील रहे हैं, इसकी झलक हमें जापानी संस्कृति पर बौद्ध धर्म का प्रभाव, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग इत्यादि में दिखलाई पड़ता है।

भारत-जापान के मध्य आर्थिक संबंधों में विकास

- भारत जापान के मध्य आर्थिक संबंध सदियों से निर्मित हैं तथा वर्तमान में भी संचालित हैं।
- वैश्विक अर्थव्यवस्था में बदलाव से दोनों के संबंध में बदलाव आता है।
- भारत पिछले दशकों में जापानी आधिकारिक विकास सहायता (ODA) ऋण का सबसे बड़ा प्राप्तकर्त्ता रहा है। उदाहरण- दिल्ली मेट्रो ODA के उपयोग के माध्यम से जापानी सहयोग के सबसे सफल उदाहरण में से एक है।
- भारत ने वर्ष 2015 में शिनकानसेन प्रणाली शुरू करने का फैसला किया था। यह प्रणाली सुरक्षा और सटीकता के मामले में दुनिया भर में हाई स्पीड रेलवे की उच्चतम श्रेणी में से एक है। भारत-जापान ने पुष्टि की है कि इसका परिचालन जल्द ही शुरू किया जाएगा।
- भारत में जापान की कई कंपनियाँ टोयोटा, होंडा, सुजुकी कार्यरत् हैं, जो आर्थिक व्यापार को बढ़ावा दे रही हैं।
- वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान भारत के साथ जापान का द्विपक्षीय व्यापार कुल 20.57 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।
- भारत की सुरक्षा संबंधी चिंताएँ (परमाणु शस्त्र) व जापान की परमाणु निशस्त्रीकरण की नीति में टकराव है, जिसने कूटनीतिक संबंधों को प्रभावित कर दोनों देशों के व्यापार-वाणिज्य की निरंतरता को बाधित किया है।
- जापान उन कुछ प्रमुख देशों में शामिल है, जिन्होंने 1991 में भारत को भुगतान संतुलन से बाहर निकलने में मदद की।

भारत-जापान के आर्थिक संबंध संभावना से कम होने के पीछे कुछ नीतिगत दबाव उत्तरदायी हैं, जो निम्नलिखित हैं-

- भारत में विनिर्माण उद्योग का अपेक्षित विकास न होने के कारण जापान को सामान प्राकृतिक व कच्चे माल के रूप में ही भेजा जाता है, जिस कारण संभावित व्यापार विकसित नहीं हुआ।
- ऑटोमोबाइल उद्योग के रूप में ही जापानी कंपनियों को अधिक सफलता प्राप्त हुई, जबकि अन्य घरेलू उपयोगी सामानों (टीवी, फ्रिज, वाशिंग मशीन) इत्यादि में अन्य देशों का प्रभुत्व रहा।
- भारत में 1990-91 के आर्थिक सुधारों के पश्चात् भी लालफीताशाही भ्रष्टाचार, राजनीतिक दलों की समाजवादी सोच आदि ने भारत में निवेश के लिये अनुकूल माहौल पैदा नहीं होने दिया।

निष्कर्षतः सरकार द्वारा किये गए कुछ सार्थक प्रयासों से व्यापार-वाणिज्य का बेहतर माहौल निर्मित हो रहा है, जिससे आगे चलकर आर्थिक संबंधों में सकारात्मक वृद्धि देखी जा सकती है, जैसे- दिल्ली-मुंबई औद्योगिक कॉरिडोर को निर्मित करने के लिये जापान द्वारा आर्थिक सहयोग,बुलेट ट्रेन समझौतों ने मधुर संबंधों को एक नई दिशा दी है।

प्रश्नः विश्व बैंक तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, संयुक्त रूप से ब्रेटनवुड्स नाम से जानी जाने वाली संस्थाएँ, विश्व की आर्थिक तथा वित्तीय व्यवस्था का संभरण करने वाले दो अंतः सरकारी स्तंभ हैं। पृष्ठीय रूप में विश्व बैंक तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष दोनों की अनेक समान विशिष्टताएँ हैं तथापि इनकी भूमिका, कार्य तथा अधिदेश कीजिये। (200 शब्द, 10 अंक)

The World Bank and the IMF, collectively known as the Bretton Woods Institutions, are the two inter-governmental pillars supporting the structure of the world's economic and financial order. Superficially, the World Bank and the IMF exhibit many common characteristics, yet their role, functions and mandate are distinctly different. Elucidate.

उत्तर: विश्व बैंक तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, दोनों वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय निधीयन की दो प्रमुख संस्थाएँ हैं, जो सदस्य देशों को उनकी आर्थिक ज़रूरतों के समय वित्त उपलब्ध कराती हैं। इन दोनों संस्थाओं की स्थापना का निर्णय 'ब्रेटनवुड्स सम्मेलन' अर्थात् संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक तथा वित्तीय सम्मेलन, 1944 के दौरान लिया गया था। इस सम्मेलन के पारित प्रस्तावों के आधार पर ही अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा विश्व बैंक की स्थापना का निर्णय लिया गया है।

विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में समानता

- दोनों संस्थाएँ आर्थिक मुद्दों से संबद्ध हैं तथा सदस्य राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था में सुधार लाने का प्रयास करती हैं।
- दोनों संस्थाएँ नियमित रूप से आँकड़ों का आदान-प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त कभी-कभी संयुक्त सेमिनार का आयोजन करवाना एवं सदस्य देशों के साथ संयुक्त मिशन भेजने का कार्य करती हैं।
- दोनों का मुख्यालय वाशिंगटन डी.सी. में है।

विश्व बैंक तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की भूमिका कार्य एवं अधिदेश में अंतर

विश्व बैंक	अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
❑ इसका गठन द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् युद्ध से त्रस्त अर्थव्यवस्थाओं के पुनर्निर्माण हेतु किया गया था।	❑ इसका गठन 1930 के दशक की आर्थिक महामंदी के पश्चात् उपजी वित्तीय समस्याओं को सुलझाने के लिये किया गया।
❑ निर्धन और विकासशील देशों में आर्थिक विकास के लिये कार्य करता है।	❑ मौद्रिक प्रणाली की देखरेख करता है।
❑ विकासशील बैंकों की विकास परियोजनाओं की वित्त पोषण के माध्यम से मदद करता है।	❑ सदस्य देशों के मध्य विनियम स्थिरता एवं व्यवस्थित विनियम संबंधों को बढ़ावा देता है।
❑ बैंक की तरह कार्य करता है जो निवेशकों एवं उधारकर्त्ताओं के मध्य मध्यस्थ की भूमिका निभाता है। वित्तीय संसाधनों की पूर्ति अंतर्राष्ट्रीय ब्रॉड बाज़ार से उधार के माध्यम से करता है।	❑ बैंक की तरह कार्य नहीं करता, यह अपने वित्तीय संसाधनों को सदस्य देशों की कोटा सदस्यता के द्वारा पूरा करता है।
❑ विश्व बैंक निर्धन एवं विकासशील देशों की सरकारों को ही ऋण प्रदान करता है।	❑ अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से इसके सभी सदस्य ऋण ले सकते हैं।
❑ दीर्घावधि के लिये ऋण प्रदान किये जाते हैं (सामान्यत: 20 वर्ष से अधिक)।	❑ ऋण की पुनर्देयता अवधि सामान्यतया 3 से 5 वर्ष तक होती है (किसी भी परिस्थिति में 10 वर्ष से ज़्यादा नहीं)।
❑ अनुषंगी संस्था होने के कारण इसकी ब्याज दरें IDA (अंतर्राष्ट्रीय विकास संघ) से ऊँची होती है।	❑ इसकी ब्याज दरें, बाज़ार की दरों से कम होती हैं।

उपरोक्त विवरण दोनों संस्थाओं के मध्य समानता एवं भिन्नता को स्पष्ट करता है।

प्रश्न: गुजराल सिद्धांत क्या है? क्या आज इसकी प्रासंगिकता है? स्पष्ट कीजिये। (200 शब्द, 10 अंक)

What is meant by Gujral Doctrine? Does it have any relevance today? Discuss.

उत्तर: 'गुजराल सिद्धांत' भारत के पूर्व प्रधानमंत्री तथा विदेशमंत्री 'इंद्रकुमार गुजराल' ने विदेश मंत्री रहने के दौरान 1996 में दिया था। 90 का दशक वैश्विक परिदृश्य में उथल-पुथल का दौर था, जब विश्व में द्विध्रुवीयता का अंत हो रहा था तथा अमेरिका एकमात्र वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा था। सोवियत संघ का पतन हो चुका था तथा आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि हो रही थी, जो कि अन्य देशों के द्वारा प्रोत्साहित एवं संचालित की जा रही थीं। इन्हीं सब के संदर्भ में गुजराल सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया। गुजराल सिद्धांत से अभिप्राय पड़ोसी देशों का भारत पर विश्वास करना था।

गुजराल सिद्धांत

- पड़ोसी देशों के साथ संबंध बेहतर करने पर बल दिया गया।
- किसी भी देश को दूसरे देश के आंतरिक मामलों में दखल नहीं देना चाहिये।
- यह निर्णय किया गया कि एक राज्य, दूसरे राज्य के विरुद्ध कार्य नहीं करेगा।
- दक्षिण एशिया का कोई भी देश अपने भू-भाग का इस्तेमाल किसी दूसरे के विरुद्ध नहीं होने देगा।

भारत द्वारा गुजराल सिद्धांत के बिंदुओं को अपनी विदेश नीति में शामिल करने के उदाहरण

- पड़ोसी राष्ट्रों के मामलों में हस्तक्षेप न करना।
- महामारी आपदा के समय पड़ोसी देशों की सहायता करना।

- उदाहरण- कोरोना के समय पड़ोसी देशों (नेपाल) को वैक्सीन दी।
- श्रीलंका- मालदीप को आर्थिक सहायता देना।
- 26 जनवरी पर दूसरे देशों के शासनाध्यक्षों को आमंत्रित करना।

अत: उपर्युक्त आधार पर कहा जा सकता है कि 'गुजराल सिद्धांत' वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में और भी ज्यादा प्रासंगिक है, क्योंकि इससे देशों के मध्य बेहतर एवं मधुर संबंध बने रहते हैं। इसी संदर्भ में वर्तमान सरकार द्वारा नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी का क्रियान्वन किया जा रहा है।

प्रश्न: भारत-श्रीलंका संबंधों के संदर्भ में, विवेचना कीजिये कि किस प्रकार आंतरिक (देशीय) कारक विदेश नीति को प्रभावित करते हैं। (200 शब्द, 10 अंक)

In respect of India–Sri Lanka relations, discuss how domestic factors influence foreign policy.

उत्तर: प्रत्येक राष्ट्र अपनी विदेशी नीति के प्रतिपादन एवं संचालन में पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को उच्चतम प्राथमिकता प्रदान करता है। इसी के तहत भारत अपने पड़ोसी देश श्रीलंका के साथ अपने संबंधों को उच्च वरीयता प्रदान करता आया है।

भारत-श्रीलंका संबंध

- **ऐतिहासिक**
  - उदाहरण- बौद्ध धर्म, जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई थी, श्रीलंका में भी महत्त्वपूर्ण धर्म है।
- **आर्थिक संबंध**
  - उदाहरण- भारत श्रीलंका का तीसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य है।
- **रक्षा**
  - उदाहरण- भारत और श्रीलंका संयुक्त सैन्य (मित्र शक्ति) और नौसेना अभ्यास (SLINEX) आयोजित करते हैं।
- **सांस्कृतिक**
  - उदाहरण- श्रीलंका में भी तमिल बोली जाती है।

भारत-श्रीलंका के संबंधों को प्रभावित करने वाले आंतरिक (देशीय) कारक

- सिंहली और तमिल के मध्य संघर्ष

उदाहरण- LTTE

- दो समुदायों के मध्य संघर्ष के कारण गृहयुद्ध (विस्थापन)
- मानवाधिकारों का हनन

उदाहरण- महिलाओं का शोषण, बच्चों की मृत्यु।

- भारतीय सरकार तमिल मूल के लोगों के उत्पीड़न के मुद्दे को वैश्विक मंच पर नहीं उठाती।
- भारतीय मछुआरों पर हमले और गिरफ्तारी की घटनाएँ।

श्रीलंका सरकार के विरोध में भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदम

- भारत द्वारा राष्ट्रमंडल सम्मेलन में प्रधानमंत्री को न भेजकर विदेश मंत्री को भेजा गया।
- वैश्विक मंच पर श्रीलंका की आलोचना की गई तथा उसे युद्ध अपराधी घोषित करने की प्रक्रिया में अन्य देशों को समर्थन दिया।
- लिट्टे के दमन में श्रीलंकाई सरकार को सैन्य सामग्री की आपूर्ति नहीं की गई।
- निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भारत के विदेशी मामलों में आंतरिक कारकों के चलते नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न हुए तथा संबंधों में गिरावट आई, जिससे पता चलता है कि किस प्रकार आंतरिक (देशीय) कारक विदेश नीति को प्रभावित करते हैं।

प्रश्न: 'मोतियों के हार' (The strings of Pearls) से आप क्या समझते हैं? यह भारत को किस प्रकार प्रभावित करता है? इसका सामना करने के लिये भारत द्वारा उठाए गए कदमों की संक्षिप्त रूपरेखा दीजिये। (200 शब्द, 10 अंक)

What do you unders"kand by 'The String of Pearls'? How does it impact India? Briefly outline the steps taken by India to counter this.

उत्तर: 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' भारत को घेरने के लिहाज से चीन द्वारा अपनाई गई एक अघोषित नीति है। इसमें चीन द्वारा भारत के समुद्री पहुँच के आस-पास के बंदरगाहों और नौसेना ठिकानों का निर्माण किया जाना शामिल है। इसके माध्यम से चीन हिंद महासागर में अपने आर्थिक व सैन्य प्रभुत्व को बढ़ा रहा है।

'मोतियों का हार' नीति का भारत पर प्रभाव

- चीन द्वारा महासागर में वर्चस्ववादी व विस्तारवादी नीति अपनाने से भारत का वर्चस्व कम होगा, क्योंकि चीन की नौसेना भारत के मुकाबले अधिक शक्तिशाली है तथा तकनीकी दृष्टि से भी उन्नत है।
- चीन द्वारा भारत के पड़ोसी देश को सहायता के नाम पर अत्यधिक वित्तीय स्रोत उपलब्ध करवाने से चीन व उनके मध्य संबंध बेहतर बनेंगे, जिसका नकारात्मक प्रभाव भारत पर पड़ेगा उदाहरण- श्रीलंका में हंबनटोटा को लीज़ पर लेना।
- इसका मुख्य उद्देश्य भारत को चारों तरफ से घेरना है, उदाहरण- भारत को उत्तर-पश्चिम की तरफ से घेरने के लिये चीन-पाक आर्थिक गलियारा (CPEC) का निर्माण।
- चीन को प्रति संतुलित करने के प्रयास में भारत का सैन्य खर्च बढ़ जाएगा, जो इसके सामाजिक-आर्थिक विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा।
- भविष्य में भारत के लिये स्वतंत्र नौवहन चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स का सामना करने के लिये भारत द्वारा उठाए गए कदम

- पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ संबंधों में नई ऊर्जा लाने के लिये लुक ईस्ट की जगह एक्ट ईस्ट पॉलिसी।
- हिंद महासागर देशों (39) के साथ मौसम परियोजना के द्वारा संबंधों को प्रगाढ़ करना।
- बांग्लादेश के साथ समझौता, जिसमें भारतीय कार्गो अब चटगांव बंदरगाह का इस्तेमाल कर सकेंगे।
- ईरान में चाबहार बंदरगाह का विकास।
- अंडमान निकोबार के नारकोंडम द्वीप पर रडार स्टेशन की स्थापना।
- वियतनाम के साथ ऊर्जा एवं रक्षा सहयोग पर बल।
- हिंद महासागर के देशों के साथ व्यापक रक्षा और समुद्री सुरक्षा सहयोग पर बल, उदाहरण- मॉरीशस को स्वदेश निर्मित पेट्रोल पंप प्रदान करना।
- जिन देशों के साथ चीन के संबंध सही नहीं है, भारत उनके साथ बेहतर संबंध बनाने की कोशिश कर रहा है।
- भारत और अमेरिका के मध्य होने वाले मालाबार सैन्य अभ्यास में चीन के विरोध के बावजूद जापान की 2015 से स्थायी भागीदारी।

उपर्युक्त तरीकों के माध्यम से भारत ने चीन की 'मोतियों का हार' नीति का सामना करने के लिये कदम उठाए हैं।

प्रश्न: बांग्लादेश के ढाका में शाहबाग स्क्वायर में हुए विरोध प्रदर्शनों ने समाज में राष्ट्रवादी व इस्लामिक शक्तियों के बीच मौलिक मतभेद उजागर किये हैं। भारत के लिये इसका क्या महत्त्व है? (200 शब्द 10 अंक)

The protests in Shahbag Square in Dhaka in Bangladesh reveal a fundamental split in society between the nationalists and Islamic forces. What is its significance for India?

उत्तर: 5 फरवरी, 2013 को ढाका के 'शाहबाग स्क्वायर' आम जनता द्वारा उग्र प्रदर्शन का दौर प्रारंभ हुआ। इस विरोध-प्रदर्शन का मुख्य कारण सन् 1971 में हुए बांग्लादेश मुक्ति संघर्ष में दोषी पाए गए अपराधियों को अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण द्वारा आजीवन कारावास देना था, जबकि आम जनता की मांग थी, इनको फाँसी दी जाए।

दोषी पाए गए इन अपराधियों पर आरोप

- बांग्लादेश के मुक्ति संघर्ष के दौरान उन्होंने पाकिस्तान का साथ दिया था।
- इन्होंने कई बेकसूर लोगों की हत्या कर दी थी और औरतों के साथ बलात्कार किया था।

2008 में अवामी लीग सत्ता में आई। उसने अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण का गठन कर दोषियों पर मुकदमा चलाने तथा सज़ा देने की प्रक्रिया प्रारंभ की दोषियों के विरुद्ध हुई कार्रवाई से जनता में इनको कम सजा देने पर रोष था, वहीं कुछ समूह इनकी सज़ा माफ करने के लिये प्रदर्शन कर रहे थे। इसके चलते वहाँ पर राष्ट्रवादी व इस्लामिक शक्तियों के मध्य मतभेद उभरे।

मतभेदों के परिणामस्वरूप घटित घटनाएँ

- बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों, विशेषकर हिंदुओं के घरों तथा मंदिर पर हमले किये गए।
- कई राष्ट्रवादी तत्त्वों, ब्लॉगरों की हत्या कर दी गई, विशेषकर जमात-ए-इस्लामी संगठन के छात्र संगठन द्वारा इन हत्याओं को अंजाम देने का शक है।
- पाकिस्तान में तथा भारत के कोलकाता में दोषियों के समर्थन में प्रदर्शन किया गया।

बांग्लादेश में हुए विरोध का भारत के लिये महत्त्व

- भारत पहले से ही उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में पाकिस्तान के कट्टरपंथियों व आतंकवादियों से जूझ रहा था, अब पूर्व में बांग्लादेश में भी नया मोर्चा खुल जाने से स्थिति चिंताजनक हो गई।
- कोलकाता में हुए विरोध-प्रदर्शन भारतीय समाज में बढ़ती विभेदना को इंगित कर रहे हैं कि किस प्रकार यहाँ भी कट्टरता बढ़ती जा रही है। भारत को इस पर काबू पाना होगा।
- बांग्लादेश में बढ़ती अशांति भारत की सुरक्षा पर प्रश्नचिह्न उत्पन्न करेगी।
- वर्तमान स्थिति में भारत को बांग्लादेश सरकार को नैतिक समर्थन देना होगा कि वह कट्टरपंथी ताकतों से सख्ती से निपटे।
- भारत को पूर्वोत्तर सीमा, विशेषकर भारत-बांग्लादेश बॉर्डर पर सुरक्षा प्रबंध कड़े करने होंगे, जिससे कि कट्टरपंथी ताकतें भारत में प्रवेश न कर पाएँ।